UGC - HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT CENTRE
PT. RAVISHANKAR SHUKLA UNIVERSITY, RAIPUR

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

Organized

ONLINE REFRESHER COURSE IN HUMANITIES

DECEMBER – 05 TO 17, 2022

REPORT

Theme of Course/Program:	**Online Refresher Course in Humanities**
Name of Course Coordinator:	**Prof. Shail Sharma,** **Professor, S.o.S. in Literature & Languages,** **Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur**
Name of Contact person from HRDC:	**Dr. Brijendra Pandey** **Assistant Professor** **Human Resource Development Centre** **Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur**
Date of Course/Program:	**05.12.2022 to 17.12.2022**
Number of Participants:	**39**
State wise number of participants:	**State(10) - Chhattisgarh-24, Madhya Pradesh-03, Maharashtra-03, Karnataka-02, Uttarakhand – 01, Tamil Nadu – 02, J&K – 1, Gujarat – 01, Kerala – 01, Rajasthan - 01**
Gender wise number of participants:	**Male – 12, Female – 27**
Number of Resource Persons	**38**
Name and Signature of Course Coordinator	
Online Platform	
Google Meet	Meet.google.com/hbi-jjqv-ade

Organizing Team

Prof. K. L. Verma
Vice Chancellor
Pt. RSU, Raipur (C.G.)

Prof. Shailendra Saraf
Director
HRDC, Pt. RSU, Raipur (C.G.)

Prof. Shail Sharma
S.o.S. in Literature & Languages,
Pt. RSU, Raipur (C.G.)

Dr. Brijendra Pandey
Assistant Professor HRDC, Pt. RSU,
Raipur, (C.G.)

डॉ. केशरी लाल वर्मा
कुलपति

Dr. Keshari Lal Verma
Vice Chancellor

पं. रविशं
Pt. Ravi
Raipur
Office
Fax
E-mail
Website
Mobile No

शुभकामना

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि
रायपुर के साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला एवं मानव
तत्वावधान में बारह–दिवसीय (5 से 17 दिसंबर 2022)
दीर्घकालीन स्मृति स्वरूप इस कार्यक्रम के विवरणिका
ऑनलाइन आयोजित इस पाठ्यक्रम का विषय 'भाषा, स
स्वरूप' पर देश के ख्यातिनाम विद्वानों ने अपने वक्त
किया।

मुझे विश्वास है कि इस आयोजन के माध्यम से
उन्नयन के साथ–साथ शैक्षिक एवं साहित्यिक विच
प्रेरणादायक सिद्ध हुआ होगा।

मुझे इस बात की भी खुशी है कि हमारे विश्वविद्
केंद्र उच्च शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषय के विद्वानों स
कार्यक्रम सहित नित–नवीन कार्यक्रम समय–समय पर संप

विश्वविद्यालय मानव संसाधन विकास केंद्र को

Human Resource Developme

Pt. Ravishankar Shukla Univers
Raipur - 492010 (C.G.)

Phone: 0771-2263828 • E-mail: hrdcprsu@gmail.com •

रायपु

शुभकामना

यह प्रसन्नता का विषय है कि पं. रविशंकर शुक्ल विश्वि
भाषा एवं साहित्य अध्ययन शाला एवं मानव संसाधन विका
बारह दिवसीय (5 से 17 दिसंबर 2022) राष्ट्रीय पुनश्चर्या प
कार्यक्रम विवरणिका का प्रकाशन किया जा रहा है। गूगल म
आयोजित इस कोर्स का विषय भाषा, साहित्य एवं संस्कृति व
बहुत से ख्यातिनाम विद्वानों ने अपने वक्तव्यों से प्रतिभागियों व

कार्यक्रम उपरांत विवरणिका के प्रकाशन से अतिथि वि
सम्मिलित प्रतिभागियों के अलावा अन्य लोग भी लाभान्वित हो

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
केंद्र समय-समय पर ऐसे आयोजन करता रहा है, जिससे
शैक्षणिक और अकादमिक उन्नयन हो सके।

विवरणिका प्रकाशन के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकाम

प्रो. शैल शर्मा
डीन, साहित्य अध्ययन शाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

Prof. Shail Sharma
HOD, Literature & Languages, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, (C.G.)

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh-492010

E-mail :
Website :
Mobile No. : 9424216090

शुभकामना

मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर भाषा एवं साहित्य अध्ययन शाला एवं मानव संसाधन विकास केंद्र के संयुक्त तत्वाधान में 12 दिवसीय (5 से 17 दिसंबर 2022) पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के आयोजन के पश्चात यह विवरणिका प्रकाशित हो रही है। ऑनलाइन मोड से संचालित इस कार्यक्रम में जिसका विषय – "भाषा साहित्य एवं संस्कृति का बदलता स्वरूप" - पर देश के अनेक विद्वान एवं विदुषी प्राध्यापकों द्वारा नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों का मार्गदर्शन किया गया एवं अपने ज्ञान से अभिसिंचित किया। मुझे विश्वास है कि ज्ञान का यह अभिसिंचन नई पीढ़ी के नव-नियुक्त सहायक प्राध्यापक के लिए प्रेरणा स्त्रोत होगा व विषय में मार्गदर्शन का कार्य करेगा, जिसका प्रत्यक्ष लाभ उन्हें व उनके विद्यार्थियों को होगा। मुझे इस बात की भी खुशी है कि विश्वविद्यालय का मानव संसाधन विकास केंद्र इस तरह के आयोजन करने में हमेशा सक्रिय व अग्रणी रहा है व अपनी अप्रत्याशित भूमिका निभा रहा है।

विवरणिका प्रकाशन हेतु मेरी अनंत शुभकामनाएं..... ।

Shail Sharma

(प्रो. शैल शर्मा)

Human Resource Development Centre

Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur - 492010 (C.G.)

Phone: 0771-2263828 • E-mail: hrdcprsu@gmail.com • Web: www.prsu.ac.in

रायपुर, दिनांक 23 जनवरी, 2023

शुभकामना

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर एवं मानव संसाधन विकास केंद्र पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर द्वारा 12 दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका विषय - भाषा साहित्य एवं संस्कृति का बदलता स्वरुप रहा। यह कार्यक्रम पूरी गरिमा व सम्मान के साथ निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रहा। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के ख्याति प्राप्त विषय विशेषज्ञों द्वारा नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों के ज्ञान में अभिवृद्धि किया गया, जिससे उनके व्यावसायिक जीवन एवं ज्ञान के परिमार्जन में यह पुनश्चर्या पाठ्यक्रम अपनी अप्रत्याशित भूमिका का निर्वाह करेगी, जिससे साहित्य व भाषा से संबंधित विद्यार्थीगण एवं समाज लाभान्वित होंगे जो समाज में सृजनात्मक व सकारात्मक वैचारिक परिवर्तन लाने में सहायक होगा। साथ ही मानव संसाधन विकास केंद्र द्वारा प्रवाहित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम की इस यात्रा के भागीरथ प्रयास में एक इकाई के रूप में स्वयं सहभागी बन सका इस पर मुझे गर्व एवं प्रसन्नता है।

इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के पत्रिका प्रकाशन पर मेरी अनन्य शुभकामनायें....।

(डॉ. बृजेन्द्र पाण्डेय)

उद्घाटन सत्र

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसागढ़ के भाषा एवं साहित्य अध्ययनशाला एवं मानव संसाधन विकास केंद्र के संयुक्त तत्वाधान में बारह दिवसीय (5 से 17 दिसंबर 2022) राष्ट्रीय रिफ्रेशर कोर्स का आयोजन किया गया। गूगल मीट के माध्यम से ऑनलाइन आयोजित इस कोर्स का विषय भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का बदलता स्वरूप था। इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केशरी लाल वर्मा ने कहा कि संविधान की आठवीं अनुसूची में अभी बाइस भाषाओं को स्थान प्राप्त है। वहीं देश में और भी अनेक महत्वूपर्ण भाषाएं जनमानस में बोली जा रही हैं। भाषाएं देश को जोडने का कार्य करती हैं। लोगों को वैचारिक रूप से एकसूत्र में पिरोने का कार्य भी भाषाएं कर रही हैं। प्रो. वर्मा ने इस रिफ्रेशर कोर्स के आयोजन को भाषाओं के उन्नयन हेतु महत्वपूर्ण बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मानव संसाधन विकास केंद्र के डायरेक्टर प्रो. शैलेंद्र सराफ ने कार्यक्रम के शुभारंभ के अवसर पर कहा कि भाषाएं हमारी संस्कृति को और भी समृद्ध बनाती हैं। उन्होंने देश के विभिन्न प्रचलित भाषाओं में और भी साहित्य सृजन की बात कही।

भाषा अध्ययन शाला के विभागाध्यक्ष एवं इस कार्यक्रम के संयोजक प्रो. शैल शर्मा ने कहा कि हमारी छत्तीसगढ़ की यह धरती प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ. नरेंद्र देव वर्मा, रमेश चंद्र महरोत्रा जैसे विद्वानों की कर्मभूमि रही है और आज हम यह भाषा उन्नयन का राष्ट्रीय कार्यक्रम कर रहे हैं, यह हमारे लिए गौरव की बात है।

मानव संसाधन विकास केंद्र के संयोजक डॉ. बृजेन्द्र पाण्डेय ने कहा कि भाषा भावों की वाहिका और विचारों की संप्रेषण की माध्यम होती है। देश की विचारों की सर्मथता उसकी भाषा से ही होती है। इसलिए भाषा-साहित्य का यह कार्यक्रम भाषा एवं साहित्य से जुड़े विद्वानों के लिए एक उन्नयन का कार्य करेगी।

कार्यक्रम के शुरूवात में सभी प्रतिभागियों का पंजीयन एवं परिचय हुआ। आगामी बारह दिनों तक चलने वाले रिफ्रेशर कोर्स के संबंध में उद्घाटन सत्र की चेयर पर्सन डॉ. नीता शर्मा सहायक प्राध्यापक श्री शंकराचार्य महाविद्यालय जुनवानी भिलाई छत्तीसगढ़ ने विस्तृत जानकारी सभी प्रतिभागियों से साझा की। उद्घाटन सत्र की रिपोर्टर रोशमीना कुजुर, सहायक प्राध्यापक शहीद नंद कुमार पटेल गवर्नमेंट कॉलेज बीरगांव रायपुर छत्तीसगढ़ रहीं।

दिनांक 5.12.2022

सत्र - द्वितीय

समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. चितरंजन कर, सेवानिवृत्त प्रोफेसर साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला, पूर्व डीन कला संकाय पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - भाषा और संस्कृति

चेयरपर्सन - डॉ. नीता शर्मा, सहायक प्राध्यापक, श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जुनवानी, भिलाई, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - रोसमीना कुजुर, सहायक प्राध्यापक, शहीद नंद कुमार पटेल गवर्नमेंट कॉलेज, बीरगांव, रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. चितरंजन कर ने अपने वक्तव्य में बताया कि किसी देश की इतिहास और संस्कृति को जानने व पहचानने का माध्यम भाषा होती है। लंबे समय से हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए प्रयास जारी है। 1918 में महात्मा गांधी ने हिंदी को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की राष्ट्रभाषा के रूप में प्रस्तावित किया था। डॉ. चितरंजन कर ने कहा कि भाषा और संस्कृति का अन्योन्याश्रित संबंध है। दोनों एक दूसरे के लिए परस्पर पूरक हैं। संस्कृति के विकास के लिए भाषा की उपयोगिता अनिवार्य है। भारतीय संस्कृति मनुष्य के भीतर छिपी हुई उसकी दिव्यता को प्रकाशित करने के प्रयत्नों का सामूहिक नाम है। हमारी संस्कृति बहुत ही प्राचीन संस्कृति है। इसके अपने मूल्य हैं, जो इसे सबसे अलग स्वरूप प्रदान करती है। उपर्युक्त तथ्यों को डॉ. कर ने विभिन्न उदारहणों के माध्यम से प्रतिभागियों के बीच स्थापित किया।

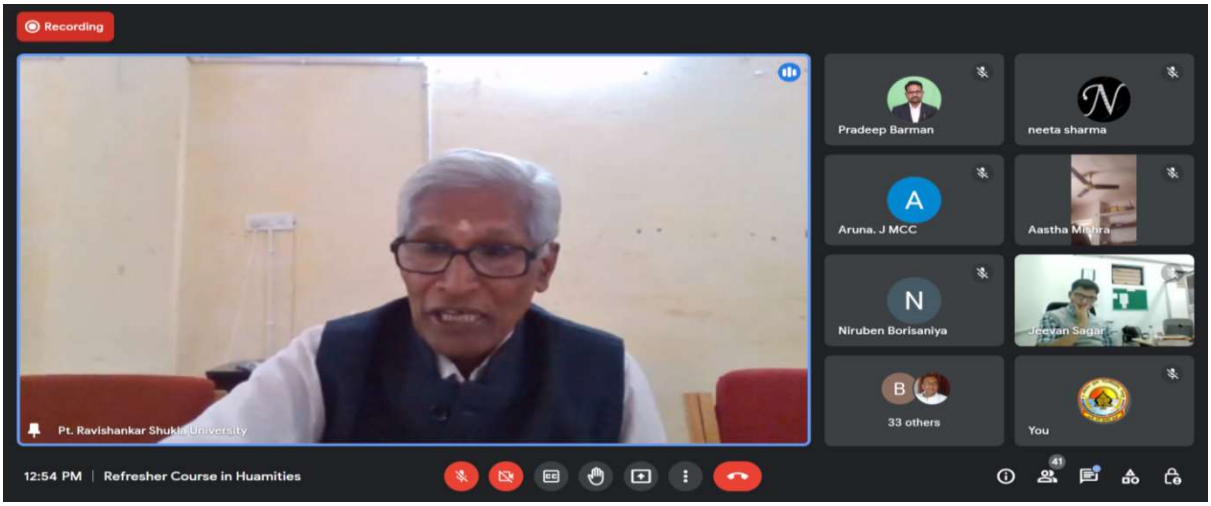

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. श्रीराम परिहार, प्रोफेसर, हिंदी विभाग खंडवा, मध्यप्रदेश

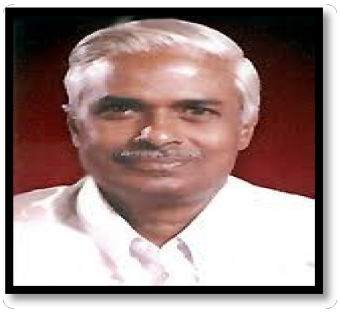

विषय - भारतीय संस्कृति अवधारणा और आयाम

चेयरपर्सन - डॉ. निरूबेन हरसुखभाई बोरीसानिया, सहायक प्राध्यापक, आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, बाबरा, गुजरात

रिपोर्टर - जीवन सागर, सहायक प्राध्यापक, हिदायतुल्लाह नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. श्रीराम परिहार ने बताया कि भारतीय संस्कृति मानवता से परिपूर्ण है, जिसमें "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" प्रमुखता से निहित है एवं इसके साथ-साथ सतत् वाहिनी है, जिसमें कभी भी ठहराव नहीं आया है। यहां इसने विभिन्न सभ्यताओं को अपने आंचल में फलने-फूलने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति मानव जाति की पहचान है और अपनी पहचान के माध्यम से ही मानव उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है और साथ ही अपनी परंपराओं व मान्यताओं को आत्मसात् करते हुए जीवन के आदर्श जीवन शैली प्रदान करता है। डॉ. श्रीराम परिहार ने आगे स्पष्ट करते हुए बताया कि वेद-पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता इत्यादि ग्रंथ सदाचार और

ईश्वरी मर्म को समझने का माध्यम रहे हैं। विरासत में मिले इन संस्कृति के आधार ग्रंथों को भूलने की वजह से निरंतर तेजी से चारित्रिक पतन एवं जीवन मूल्यों का ह्रास हो रहा है, जिस पर हमें चिंतन करने की आवश्यकता है।

सत्र - चतुर्थ
समय - 16.00 से 17.30 तक

विषय विशेषज्ञ - डॉ लल्टू, आलोचक, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, आईआईटी, हैदराबाद

विषय - भाषा और साहित्य कुछ बुनियादी बातें

चेयरपर्सन - डॉ. निरूबेन हरसुखभाई बोरीसानिया, सहायक प्राध्यापक, आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, बाबरा, गुजरात

रिपोर्टर - जीवन सागर, सहायक प्राध्यापक, हिदायतुल्लाह नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. लल्टू ने बताया कि भाषा संचार का माध्यम है, भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है। अगर हम साहित्य के बारे में बात करते हैं तो यह भाषा की सुंदरता में कुछ जोड़ता है। साहित्य पढ़ने के हित को विकसित करता है। कविता या नाटक साहित्य के अन्य रूपों के माध्यम से आमतौर पर लेखक लिखने का इरादा रखते हैं। अगर हम किसी से सीधे नहीं कह सकते हैं तो हम कविता या गीत या कहानियों या संवाद के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से संदेश भेज देंगे। साहित्य के रूप भाषा के गहने हैं। डॉ. लल्टू ने स्पष्ट करते हुए कहा कि भाषा और साहित्य परस्पर एक दूसरे को आपस में पिरो कर एक माला के रूप में व्यक्त होकर शोभायमान होते हैं। यही भाषा एवं साहित्य की सुंदरता है जो दोनों को विशिष्ट स्थान दिलाती है।

दिनांक 6.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

विषय - भारतीय संस्कृति

चेयरपर्सन - श्रीमती रूप कुमारी ध्रुर्वा, सहायक प्राध्यापक, **गवर्नमेंट कमला देवी राठी महिला पीजी कॉलेज**, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. गीता लाखोत्रा, **सहायक प्राध्यापक, पंडित प्रेमनाथ डोगरा गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज सांबा**, जम्मू एंड कश्मीर

डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने बताया कि भारतीय संस्कृति सतत् वाहिनी है। भारत के रीति-रिवाज भाषाएं-प्रथाएं और परंपराएं विविधताओं को समेटे हुए एक दूसरे से परस्पर संबंधों में प्रगाढ़ता एकता का अद्वितीय उदाहरण देती हैं। भारत कई धार्मिक प्रणालियों जैसे सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म का जनक है। भारत की संस्कृति बहुआयामी है, जिसमें भारत का महान इतिहास छिपा है। उन्होंने आगे बताया कि सनातन सभ्यता जो सिंधु घाटी की सभ्यता के दौरान पनपी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई। पहले भी भारतीय संस्कृति का पताका विश्व में फ हराता था और आज भी हमारी संस्कृति का डंका विश्व में बजता है। हमारी संस्कृति को जानने-समझने की लालसा लिए प्रतिवर्ष लाखों विदेशी भारत की संस्कृतिक भूमि में कदम रखते हैं। विदेशी हमारी संस्कृति से इतने ज्यादा प्रभावित हो जाते हैं कि कई यहीं के होकर रह जाते हैं।

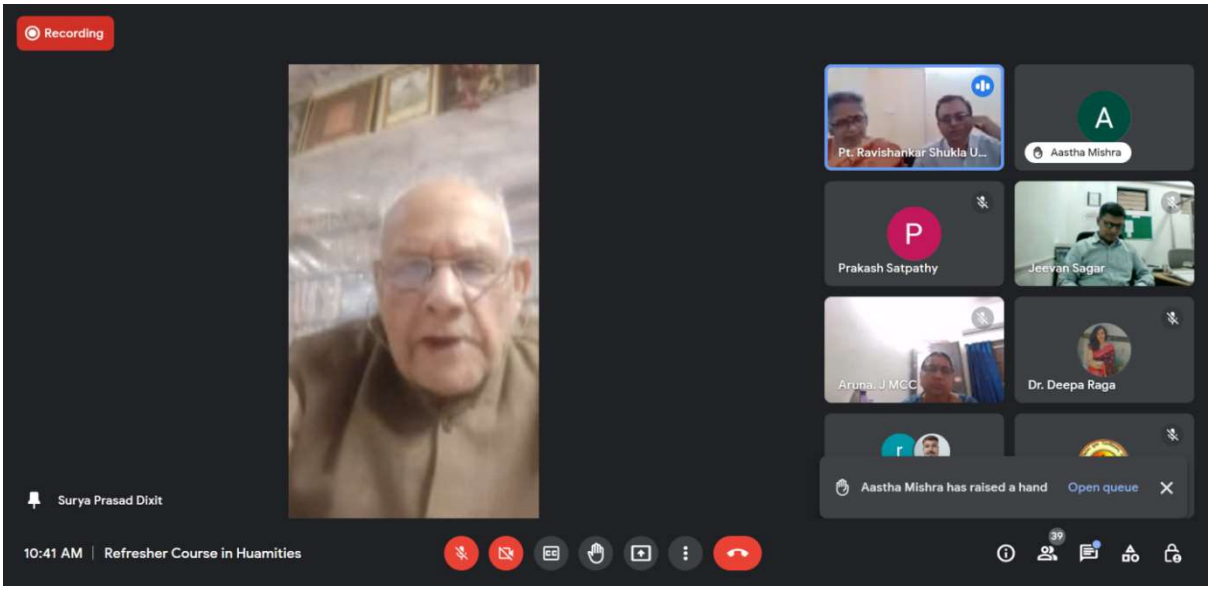

सत्र - द्वितीय
समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. अशोक श्रोट, प्रोफेसर, इंस्टीट्यूट आफ एडवांस स्टडीज इन इंग्लिश रिकॉग्नाइज्ड बाय एंड एफ़्लीटेड टू द यूनिवर्सिटी ऑफ पुणे, पुणे, महाराष्ट्र

विषय - इमर्जिंग रिसर्च सिनेरियो

चेयरपर्सन - श्रीमती रूप कुमारी धुर्वा, सहायक प्राध्यापक, **गवर्नमेंट कमला देवी राठी महिला पीजी कॉलेज** राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. गीता लखोत्रा, **सहायक प्राध्यापक, पंडित प्रेमनाथ डोगरा गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज**, सांबा, जम्मू एंड कश्मीर

डॉ. **अशोक श्रोट ने विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वर्तमान समय वैज्ञानिक आविष्कार का समय है,** जहां विभिन्न क्षेत्रों में नित्य नए आविष्कार हो रहे हैं, जिससे हमारा मानव जीवन अत्यधिक सुविधा में हो गया है, जिसका प्रभाव हर क्षेत्र में स्पष्टता पूर्वक देखा जा सकता है। इसके साथ-साथ यह भी सर्वविदित है कि जिज्ञासा उतनी ही पुरानी है, जितना की मानव जाति। अनुसंधान एक जिज्ञासा है, क्योंकि नए विचार और विघटनकारी नवाचार एक तकनीकी तूफान लाते हैं। डॉ. **अशोक श्रोट ने आगे कहा कि आज जो हम प्रगति और विकास देखते हैं,** वह कल के शोध का परिणाम है। आज हम जो शोध करते हैं, वही हमारे आने वाले कल को परिभाषित करता है। आज हमें ध्यान देने की जरूरत है कि अनुसंधान कहां जा रहा है, रुझान क्या है, अब समय आ गया है कि उभरते शोध परिदृश्य को समझा जाए और गहराई से मंथन किया जाए।

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय, प्रोफेसर, मुबंई विश्वविद्यालय, मुबंई

विषय - साहित्य और संस्कृति का अंर्तसंबंध

चेयरपर्सन - यशवंत कुमार साव, **सहायक प्राध्यापक गवर्नमेंट कॉलेज अरमरीकला**, जिला – बालोद, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. सुनीता गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, नरसिंहगढ़, मध्य प्रदेश

डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय ने बताया कि साहित्य और संस्कृति परस्पर एक दूसरे का हाथ थाम कर आगे बढ़ते हैं। साहित्य पाठक के हृदय में जिज्ञासा एवं पढने की ललक को विकसित करता है। दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा, जिसका किसी न किसी मोड़ पर साहित्य से वास्ता न पड़ा हो। साहित्य और संस्कृति एक दूसरे के पूरक होते हैं। हमारे जन्म से लेकर हमारे बड़े होने तक हमारी संस्कृति हमारी पहचान होती है, जिसकी पहचान हमारे साहित्य से होती है। संस्कृति के बिना व्यक्ति का कोई महत्व नहीं होता है। हमारे रहन-सहन वेशभूषा परंपरा रीति-रिवाज, कुलगीत संस्कार और समाज से मिलने वाला विचार हमारे संस्कृति का हिस्सा होती है, जिससे हम अविच्छिन्न रूप से जुड़े होते हैं।

सत्र - चतुर्थ
समय - 16.00 से 17.30

विषय विशेषज्ञ - डॉ. मधु कमरा, डिपार्टमेंट ऑफ इंग्लिश, दुर्गा कॉलेज, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - साहित्यिक संभाषण

चेयरपर्सन - डॉ. यशवंत कुमार साव, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट कॉलेज, अरमरीकला, जिला-बालोद, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. सुनीता गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, नरसिंहगढ़, मध्य प्रदेश

डॉ. मधु कमरा ने विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि सांस्कृतिक संभाषण एक दृष्टिकोण है। संस्कृत के 'भाष' धातु में 'ल्युट' प्रत्यय (अन) लगाने से भाषण शब्द की व्युत्पत्ति होती है। इससे पहले 'सम' उपसर्ग जोडने से 'संभाषण' शब्द बनता है। संभाषण का सामान्य अर्थ है - बातचीत अथवा वार्तालाप। 'सम' उपसर्ग के साथ-साथ अव्यय भी है। इसका अर्थ है समान, तुल्य, बराबर और सारा। 'संभाष' में ल्युट प्रत्यय (अन) जोडने से इसका अर्थ

अभिवादन, कथन और वार्तालाप भी होता है। वार्तालाप के अंतर्गत अनुभाषण, आलाप, भाषण, उक्ति, कथोपकथन, गुफ्तगू, चर्चा, बातकही, वार्ता, संलाप, संवाद और संभाषण शामिल है। आप जान ही चुके हैं कि संभाषण में वक्ता और श्रोता के बीच संदेशों का आदान-प्रदान समान रूप से होना चाहिए। वार्तालाप या संवाद, व्याख्यान, वाद-विवाद, एकालाप, परिचर्चा और जनसंचार आदि संभाषण के विविध रूप हैं। व्याख्यान संभाषण का विशिष्ट रूप है। इसका प्रयोग आम तौर पर किसी विषय की व्याख्या करने के लिए किया जाता है। अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ श्रोताओं को प्रेरित करने की क्षमता व्याख्याता में होनी चाहिए। व्याख्याता अपनी बात को तर्कों के आधार पर श्रोता के समक्ष प्रस्तुत करता है। व्याख्यान में व्याख्याता कम समय में अधिक जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। व्याख्यान में भी यदि रोचकता नहीं है तो श्रोता ऊब जाते हैं। अत: व्याख्यान को रोचक बनाए रखने के लिए व्याख्याता कभी-कभी तकनीकी प्रस्तुतीकरण या प्रश्नोत्तरी की सहायता ले सकता है।

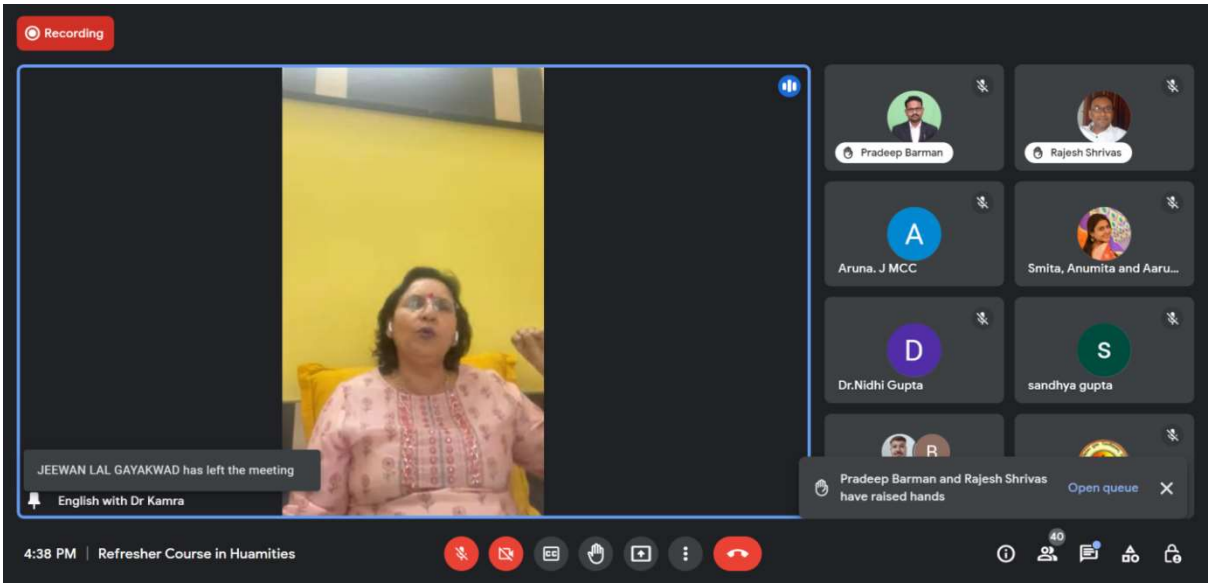

दिनांक 7.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. शैलेंद्र कुमार शर्मा, प्रोफेसर, विक्रम यूनिवर्सिटी, उज्जैन, मध्यप्रदेश

विषय - स्वाधीनता आंदोलन में साहित्य की भूमिका

चेयरपर्सन - डॉ श्रुति झा, सहायक प्राध्यापक, चंद्रपाल डड़सेना गवर्नमेंट कॉलेज, पिथौरा, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. जयति विश्वास, सहायक प्राध्यापक, वीरांगना अवंती बाई गवर्नमेंट कॉलेज, छुईखदान, छत्तीसगढ़

डॉ. **शैलेंद्र कुमार शर्मा ने सत्र का प्रारंभ करते हुए बताया कि देश की स्वतंत्रता के लिए** 1857 से लेकर 1947 **तक क्रांतिकारियों व आंदोलनकारियों के साथ ही लेखकों,** कवियों **और पत्रकारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कुछ पंक्तियों के माध्यम से इस बात को और अधिक प्रमाणिक तौर पर अभिव्यक्त किया** - जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है, वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है, हो जहां बली शीश अगणित एक सिर मेरा मिला लो। **इसी क्रम में प्रेमचंद की रंगभूमि,** कर्मभूमि उपन्यास, **भारतेंदु हरिश्चंद्र का भारत दर्शन** नाटक, **जयशंकर प्रसाद का चंद्रगुप्त स्कंद गुप्त नाटक,** वीर सावरकर की 1857 **का प्रथम स्वाधीनता संग्राम या पंडित नेहरू की भारत एक खोज या लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की गीता रहस्य या शरद बाबू का उपन्यास पद के दावेदार, जिसने भी इन्हें पढ़ा उसने घर परिवार की चिंता छोड़ देश की खातिर अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए** स्वतंत्रता के महासमर में कूदते देर नहीं लगी। इस तरह से साहित्य ने स्वाधीनता आंदोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं देश को जागृत किया।

सत्र - द्वितीय
समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. अशोक श्रोट, **प्रोफेसर इंस्टीट्यूट आफ एडवांस्ड स्टडीज इन इंग्लिश रिकॉग्नाइज्ड एंड एफ्लिक्टेड** टू द यूनिवर्सिटी ऑफ पुणे, पुणे, **महाराष्ट्र**

विषय - डिजिटल ह्यूमैनिटी

चेयरपर्सन - डॉ. श्रुति झा, सहायक प्राध्यापक, चंद्रपाल डड़सेना गवर्नमेंट कॉलेज, पिथौरा, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. जयती विश्वास, सहायक प्राध्यापक, वीरांगना अवंती बाई गवर्नमेंट कॉलेज, छुईखदान, छत्तीसगढ़

डॉ. **अशोक श्रोट ने बताया कि डिजिटल मानविकी** (डीएच) कंप्यूटिंग या डिजिटल **प्रौद्योगिकियों और मानविकी के विषयों के चौराहे पर विद्वतापूर्ण गतिविधि का एक क्षेत्र है। इसमें मानविकी में डिजिटल संसाधनों के** व्यवस्थित उपयोग के साथ-साथ उनके **अनुप्रयोग का विश्लेषण भी शामिल है। डीएच को छात्रवृत्ति करने के नए** तरीकों के रूप में परिभाषित **किया जा सकता है जिसमें सहयोगी, ट्रांसडिसिप्लिनरी और कम्प्यूटेशनल रूप से लगे** हुए अनुसंधान, **शिक्षण और प्रकाशन शामिल हैं। यह मानविकी के अध्ययन के लिए डिजिटल उपकरण और विधियों को इस मान्यता के साथ लाता है कि मुद्रित शब्द अब ज्ञान उत्पादन और वितरण का मुख्य माध्यम** नहीं है। नए **अनुप्रयोगों और तकनीकों का उत्पादन और उपयोग करके, डीएच नए प्रकार के शिक्षण को संभव बनाता है,** जबकि **एक ही समय में यह अध्ययन और समालोचना करता है कि ये सांस्कृतिक विरासत और डिजिटल संस्कृति** को कैसे प्रभावित करते हैं। **डीएच को अनुसंधान में भी लागू** किया जाता है। इस प्रकार, **डीएच की एक विशिष्ट विशेषता** मानविकी और डिजिटल के बीच दो-तरफ़ा **संबंध की खेती है। दोनों मानविकी अनुसंधान की खोज में प्रौद्योगिकी को** नियोजित करते हैं।

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय मूल्यांकनकर्ता - डॉ. बृजेन्द्र पांडे, मानव संसाधन विकास केंद्र, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - सूक्ष्म शिक्षण

चेयरपर्सन - डॉ. शिव शेट्टी नारायण अशोकराव, सहायक प्राध्यापक पंसारे महाविद्यालय, अर्जापुर, महाराष्ट्र

रिपोर्टर - डॉ. राजश्री नायडू, सहायक प्राध्यापक, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा, रायपुर, छत्तीसगढ़

सूक्ष्म शिक्षण की इस प्रस्तुतीकरण सत्र में समस्त प्रतिभागियों हेतु 2 मिनट का समय निर्धारित किया गया था। इस निर्धारित समय में समस्त प्रतिभागियों को अपने द्वारा चिन्हाकिंत विषय पर प्रस्तुतीकरण देना था, जिसमें समस्त प्रतिभागियों ने बारी-बारी से अपना प्रस्तुतीकरण दिया। प्रस्तुतीकरण में मूल्यांकन कर्ता के द्वारा सूक्ष्मता के साथ मूल्यांकन कार्य किया गया । तृतीय सत्र के समापन के पश्चात सूक्ष्म शिक्षण प्रस्तुत करने वाले समस्त प्रतिभागियों को सूक्ष्म शिक्षण की बारीकियां, इनकी विशेषताओं एवं इनके महत्व के बारे में विस्तार पूर्वक विषय विशेषज्ञ के द्वारा बताया गया। इस मार्गदर्शन से समस्त प्रतिभागियों को काफी लाभ प्राप्त हुआ।

सत्र - चतुर्थ
समय - 16.00 से 17.30

विषय मूल्यांकनकर्ता - डॉ. बृजेन्द्र पांडे, मानव संसाधन विकास केंद्र, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - सूक्ष्म शिक्षण

चेयरपर्सन - डॉ शिव शेट्टी नारायण अशोकराव, सहायक प्राध्यापक पंसारे महाविद्यालय अर्जापुर महाराष्ट्र

रिपोर्टर - डॉ राजश्री नायडू सहायक प्राध्यापक सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय नवापारा रायपुर छत्तीसगढ़

चतुर्थ सत्र के इस प्रस्तुतीकरण में शेष प्रतिभागियों हेतु भी 2 मिनट का समय निर्धारित किया गया था। इस निर्धारित समय में समस्त प्रतिभागियों को अपने द्वारा चिन्हांकित विषय पर प्रस्तुतीकरण देना था, जिसमें समस्त प्रतिभागियों ने बारी-बारी से अपना प्रस्तुतीकरण दिया। प्रस्तुतीकरण में मूल्यांकनकर्ता के द्वारा सूक्ष्मता के साथ मूल्यांकन कार्य किया गया। तृतीय सत्र के समापन के पश्चात सूक्ष्म शिक्षण प्रस्तुत करने वाले समस्त प्रतिभागियों को सूक्ष्म शिक्षण की बारीकियां इनकी विशेषताओं एवं इनके महत्व के बारे में विस्तार पूर्वक विषय विशेषज्ञ के द्वारा मार्गदर्शन दिया गया। इस मार्गदर्शन से समस्त प्रतिभागियों को काफी लाभ प्राप्त हुआ।

दिनांक 8.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. प्रमोद कोवापार्थ, डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी, कालीकट यूनिवर्सिटी मलापुरम, केरल

विषय - समकालीन कविता

चेयरपर्सन - डॉ सविता वर्मा, सहायक प्राध्यापक श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी रायपुर छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. टी मंगायारकरासी, सहायक प्राध्यापक गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज मनूर तिरुनेलवेली तमिलनाडु

डॉ. प्रमोद कोवापार्थ ने बताया कि समकालीन कविता, आधुनिक हिंदी कविता के विकास में वर्तमान काव्यान्दोलन है। समकालीन कविता का आरम्भ 1962-64 से माना जाता है। साठोत्तरी कविता और समकालीन कविता को एक मान लेना उचित नहीं है। समकालीन कविता, आधुनिक कविता के विकास में नई चेतना, नयी भाव-भूमि, नई संवेदना तथा नए शिल्प के बदलाव की सूचक काव्यधारा है। इस काव्य धारा का लक्ष्य आम-आदमी और समाज की वास्तविकता को प्रस्तुत करना है। मुक्तिबोध, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, कुमारेंद्र, आलोक धन्वा, श्रीराम तिवारी, धूमिल, शलभ श्रीराम सिंह, कुमार विकल, विजेंद्र, पंकज सिंह, निर्मल वर्मा, आनंद प्रकाश, चंचल चौहान, शशि प्रकाश आदि समकालीन कविता के प्रमुख कवि हैं। इस कविता के कवियों ने समकालीन आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रश्नों का यथार्थ वर्णन किया है। बच्चन, दिनकर तथा अज्ञेय के समान ये कवि ऊंचे पदों के लिए लालायित नहीं है। ये कवि अपने आसपास के अनुभवों को कविता में स्थान देते हैं। धूमिल एक स्थल पर काव्य-रचना पर ही प्रश्नचिन्ह लगाते हुए कहते हैं -

कविता में जाने से पहले
मैं आपसे पूछता हूं
जब इससे न चोली बन सकती है
न चोंगा

तब आप कहो
इस ससुरी कविता को
जंगल से जनता तक
ढोने से क्या होगा ?

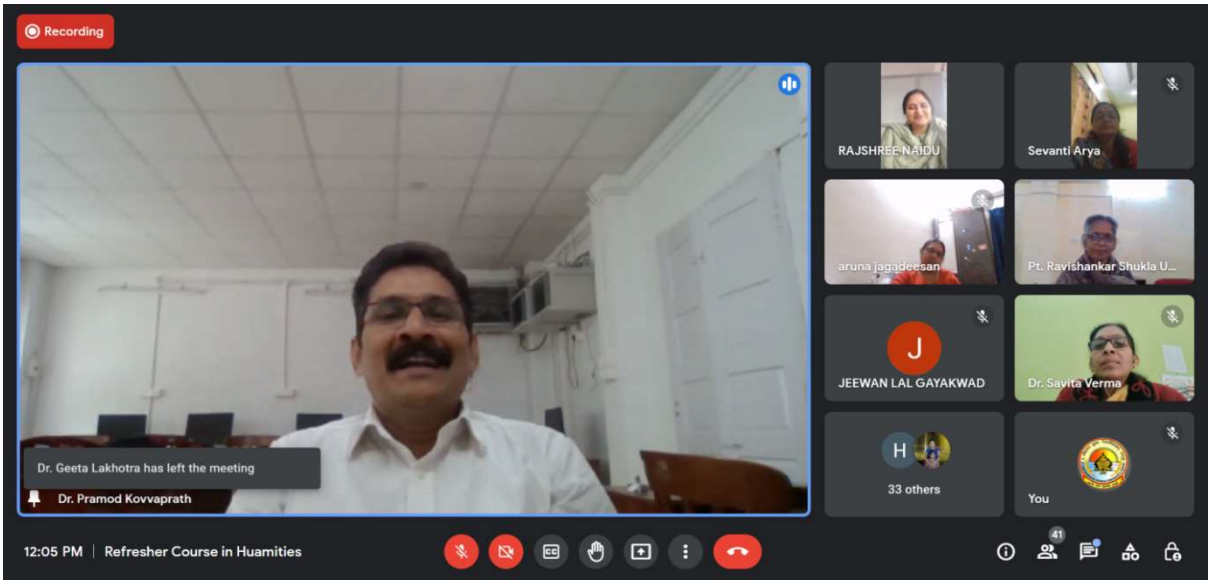

सत्र - द्वितीय
समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. एस.जे.एच आबिदी, भूतपूर्व प्रोफ़ेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

विषय - साहित्य संभाषण

चेयरपर्सन - डॉ. सविता वर्मा, **सहायक प्राध्यापक,** श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. टी मंगायारका रासी, सहायक प्राध्यापक, **गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज,** मनूर, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु

डॉ एस.जे.एच **आबिदी ने बताया कि सहित्य शब्द अंग्रेजी भाषा के लिटरेचर शब्द का पर्यायवाची माना** जाता है। **इस शब्द की सीमा बहुत व्यापक है।** किसी भाषा में लिखित अर्थात् अक्षरों में गुंथी हुई सम्पूर्ण सामग्री साहित्य या लिटरेचर कहलाती है। जीवन-बीमा निगम के कर्मचारी अपने नियम आदि का ज्ञान कराने वाली छपी हुई **सामग्री को अपना साहित्य कहते हैं। औषधियों की कम्पनियां द्वारा प्रचार के लिए छापी हुई पुस्तिकाएँ तथा मूल्यसूची भी साहित्य ही कहलाती हैं।** राजनीति, ज्योतिष, अर्थशास्त्र आदि विषयों के ग्रंथ भी साहित्य के अन्तर्गत गिने जाते हैं। **संवाद एक साहित्यिक तकनीक है जो दो या दो से अधिक पात्रों के बीच होने वाली बातचीत से**

संबंधित है। ये दोनों पात्र आपस में शब्दों का आदान-प्रदान करते हैं और इसलिए, लेखन को कई अलग-अलग तरीकों से प्रभावित कर सकते हैं। संवाद अक्सर किसी विशेष विषय से संबंधित होता है। यह विषय कभी-कभी काम का मुख्य विषय होता है और कभी-कभी यह केवल स्पर्शरेखा या पूरी तरह से असंबंधित होता है। अधिक बार नहीं, कविता में, जो आमतौर पर गद्य से छोटा होता है, संवाद पद्य के एक केंद्रीय विषय के आसपास केंद्रित होता है। साहित्य में एक तकनीक के रूप में संवाद शास्त्रीय साहित्य के लिए कई अन्य साहित्यिक तकनीकों के रूप में वापस पहुंचता है। प्लेटो जैसे उस समय के महानतम दार्शनिकों ने इसे अपने कार्यों में प्रयोग किया। यह इन उदाहरणों में एक नाटकीय उपकरण या कथानक को आगे बढ़ाने के तरीके के रूप में नहीं बल्कि एक अलंकारिक उपकरण के रूप में नियोजित किया गया था।

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. शैलेंद्र कुमार सिंह, प्रोफेसर डिपार्टमेंट ऑफ लिंग्विस्टिक नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग, मेघालय

विषय - भारत भाषा और भाषी

चेयरपर्सन - डॉ. राजेश कुमार श्रीवास, सहायक प्राध्यापक, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति कॉलेज, नवापारा, रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. निधि गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट जी एन ए पीजी कॉलेज, भाटापारा, छत्तीसगढ़

तृतीय सेशन के रिसोर्स पर्सन प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार सिंह ने अपने वक्तव्य में बताया कि भारत भाषाई विविधताओं का देश है व भारत विश्व गुरु बनने की ओर निरंतर अग्रसर है इसलिए भाषा को समृद्ध होना आवश्यक है। उन्होंने उदाहरण देकर भाषाई विविधता के बारे में 2011 के जनगणना का संदर्भ देते हुए बताया की 2011 के

जनगणना के अनुसार भारत में 19590 भाषाएं हैं, जिनमें से 1369 भाषाएं मातृभाषा के रूप में मान्य है, वहीं 1474 भाषाएं अवर्गीकृत है और 121 भाषाओं का उचित पहचान किया गया है। व्यापक मात्रा में भाषाओं को उपेक्षित रखने के लिए हमारा नजरिया ही जिम्मेदार है। इसी क्रम में उन्होंने इस बात पर बल देते हुए कहा कि मातृभाषा के प्रति हमारी क्या जिम्मेदारी है। अपनी भाषा के विकास में हम किस प्रकार योगदान कर सकते हैं। मातृभाषा को किस प्रकार से प्रोत्साहन देना चाहिए। सत्र के समापन के पश्चात प्रतिभागियों के लिए प्रश्नोत्तर काल रखा गया था, जिसमें प्रतिभागी अपने प्रश्नों का समाधान रिसोर्स पर्सन के द्वारा प्राप्त कर सकें।

सत्र - चतुर्थ
समय - 16.00 से 17.30 तक

विषय विशेषज्ञ - डॉ. श्रीपाल भाले चंद्र जोशी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, आर एस टी एम यूनिवर्सिटी, नागपुर, महाराष्ट्र

विषय - संस्कृति साहित्य और संप्रेषण

चेयरपर्सन - डॉ. राजेश कुमार श्रीवास, सहायक प्राध्यापक, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति कॉलेज, नवापारा, रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. निधि गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट जी एन ए पीजी कॉलेज, भाटापारा, छत्तीसगढ़

डॉ. श्रीपाल भाले चंद्र जोशी ने बताया कि मानव जाति के संस्कृतिक प्रथाओं एवं मान्यताओं का भाषिक विश्लेषण मानव विज्ञान में अवधारना के रुप में किया जाता हैं। भाषा का अध्यन बिना उसकी संस्कृति को जाने करना असंभव है। संदेशों को संकेतो द्वार व्यक्त करने की प्रक्रिया संप्रेषण है। सांस्कृतिक सम्प्रेषण को साहित्य ने सर्वाधिक सहायता प्रदान की है। आज भी सहित्य ही एक ऐसा माध्यम है जिससे सांस्कृतिक मूल्यों का पूरी निष्ठा के साथ आदान-प्रदान होता हैं। फिल्म, व्यवसाय, नाटक, गीत, धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन आदि में भी संस्कृतिक सम्प्रेषण के साधनों के रुप में देखा जा सकता हैं। लेकिन इन माध्यमों की एक विशिष्ट सीमा होती है। संप्रेषण साधनों के आविष्कारों के कारण आज संप्रेषण साधन पूर्ण रुप से बदल गए है। जहां मानव ने संप्रेषण के साधन के रुप मे कबूतर आदि और जानवरों का उयोग किया तो आज मोबाईल, कंप्यूटर, इंटरनेट, फोन, दूरदर्शन, रेडियो, एफएम आदि का उपयोग किया जा रहा हैं। यह सबसे महत्वपूर्ण और सोचनीय विषय है कि इन माध्यमों से संप्रेषण अधिक गति से होता है लेकिन सांस्कृतिक संप्रेषण प्रभावी रुप से नहीं होता। जिसके कारण संस्कृतियों का महत्व भी कम होता जा रहा है। विश्वमैत्री और विश्व बंधुत्व की संकल्पना के कारण दूसरी संस्कृति को जानने के लिए उस परिवेश में रहना लाभदायक होगा या फिर उस संस्कृति की भाषा या साहित्य को पूर्ण रुप से ज्ञात करना होगा।

दिनांक 9.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. पवन अग्रवाल, **प्रोफेसर**, डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी, लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

विषय - लोक साहित्य का बदलता परिदृश्य

चेयरपर्सन - प्रमिला पटेल, **सहायक प्राध्यापक**, शशिधर पंडा गवर्नमेंट कॉलेज, सरिया, **छत्तीसगढ़**

रिपोर्टर - प्रदीप बर्मन, **सहायक प्राध्यापक**, हिदायतुल्ला नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर, **छत्तीसगढ़**

डॉ. **पवन अग्रवाल ने लोक साहित्य को स्पष्ट करते हुए बताया कि लोक साहित्य को लोक की बहुआयामी प्रतिभा का संचित कोष कहा जाता है**। लोक अभिव्यक्ति का वाणी रूप लोक साहित्य में देखा जा सकता है। यह अभिव्यक्ति लोक के अनुभवों का निचोड़ होती है। लोक गीत लोक साहित्य के मणिरत्न कहे जा सकते हैं। लोग के उत्सव में, **संस्कार श्रम एवं बाल मनोविज्ञान से संबंधित लोक गीत लोक जीवन के हृदय स्थल की यात्रा कराते हैं**। इसी प्रकार लोक कथाएं लोक की शिक्षा का सशक्त माध्यम होती हैं। इतिहास परंपरा के साथ नैतिक एवं आदर्श जीवन मूल्यों की प्रदर्शक महान चरित्र नायकों और लोकरक्षक देवी-देवता और योद्धाओं से संबंधित लोक कथाएं लोक का मार्ग प्रशस्त करती हैं। लोक कथाओं की भांति लोकनाट्य भी लोक अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम होते हैं। अपनी स्वच्छंद कथावस्तु मुक्ताकाश मंच सज्जा के साथ गायन और अभिनय द्वारा लोकनाट्य लोक का मनोरंजन तो करते ही हैं, समाज के इतिहास संस्कृति और धार्मिक नैतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति करके लोक का मार्गदर्शन भी करते हैं। बदलते हुए सामाजिक परिवेश के साथ-साथ लोक साहित्य में भी आधुनिकता का समावेश होते जा रहा है।

सत्र - द्वितीय
समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. रमाकांत पांडे, **प्रोफेसर**, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल, मध्यप्रदेश

विषय - संस्कृत और हिंदी साहित्य का स्वरूप

चेयरपर्सन - प्रमिला पटेल, **सहायक प्राध्यापक**, शशिधर पंडा गवर्नमेंट कॉलेज, सरिया, **छत्तीसगढ़**

रिपोर्टर - प्रदीप बर्मन, **सहायक प्राध्यापक**, हिदायतुल्ला नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर, **छत्तीसगढ़**

डॉ . **रमाकांत पांडे ने कहा कि साहित्य जिन मानव मूल्यों को ग्रहण कर उनके स्वरूप** को अभिव्यक्त करता है, वह साहित्यिक मूल्य कहलाते हैं। **मानव मूल्य एवं साहित्यिक मूल्य वस्तुत**: एक ही हैं। **मूल्य समाज की मान्यताओं और धारणाओं के अनुसार बनते मिटते और बदलते रहते हैं, किंतु शाश्वत मूल्य ना कभी बदलते हैं और ना मिलते हैं।** मानवीय मूल्य और साहित्य हमारे **जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है। मानवीय मूल्य और साहित्य हमारे जीवन में** काफी परिवर्तन ला सकता है। **मानव मूल्य से तात्पर्य मानव के उन गुणों से है, जो उन्हें बुजुर्गों से प्राप्त हुए हैं। मानवीय मूल्यों में सत्य ईमानदारी निष्ठा कर्तव्य आज्ञाकारी ता** एकजुटता आदि आते हैं। **साहित्य में हमें समाज के** बारे में पढ़ने को मिलता है। **साहित्य कई तरह के होते हैं,** कई साहित्य की रचना तरह-तरह के लेखकों कवियों के द्वारा की गई है। साहित्य में सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, मुंशी, प्रेमचंद, **विष्णु शर्मा आदि जैसे कई साहित्यकार हैं, जिन्होंने साहित्य की रचना करके हमें काफी महत्वपूर्ण बातें बताई हैं।** साहित्य में पुराने समय के लोगों के बारे में पढ़ने को मिलता है। **जब हम उन लोगों के बारे में पढ़ते हैं तो हमें उनके प्रसंगों से प्रेरणा भी मिलती है।**इस तरह से हम देखते हैं तो साहित्य **कभी हमारे जीवन में काफी महत्वपूर्ण योगदान हैं। बहुत सारे लोग हैं जिन्होंने मानवीय मूल्य को अपनाकर अपने जीवन को बदला है और अपने जीवन को इतना विशेष बनाया है कि हम उनके बारे में साहित्य में पढ़ते हैं और उनसे बहुत कुछ सीखते हैं।**

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. जया तिवारी, प्रोफेसर डिपार्टमेंट ऑफ इंग्लिश, **गवर्नमेंट डीबी गर्ल्स पीजी कॉलेज**, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - भरतमुनि रस सिद्धांत

चेयरपर्सन - डॉ.शर्मिला चौहान, सहायक प्राध्यापक, माता जीजा गवर्नमेंट पीजी गर्ल्स कॉलेज, इंदौर, मध्य प्रदेश

रिपोर्टर - डॉ. राजश्री नायडू, सहायक प्राध्यापक, भारती यूनिवर्सिटी, दुर्ग, छत्तीसगढ़

डॉ. **जया तिवारी ने अपने वक्तव्य से बताया कि भारतीय काव्यशास्त्र में रस सिद्धांत सबसे प्राचीन है।** भरतमुनि को रस संप्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने ही रस का सबसे पहले निरूपण नाट्यशास्त्र में किया इसलिए उन्हें रस निरूपण का प्रथम व्याख्याता एवं उनके ग्रंथ नाट्यशास्त्र को रस निरूपण का प्रथम ग्रंथ माना जाता है। उन्होंने अपने ग्रंथ के छठे अध्याय में रस सूत्र तथा सातवें में विभाव अनुभव और संचारी भाव तथा स्थाई भाव की व्याख्या की है। उन्होंने बताया कि रस अनुभूति का विषय है वह अपने में कोई अनुभूति नहीं है। भरत मुनि ने राज को आस्वाद प्रदान करने वाला तत्व मानते हैं। भरतमुनि के अनुसार जिस प्रकार नाना प्रकार के व्यंजनों औषधियों एवं द्रव्य पदार्थों के मिश्रण से बने रस की निष्पत्ति होती है, उसी प्रकार नाना प्रकार के भाव के सहयोग से स्थाई भाव भी नाट्य रस को प्राप्ति हो जाते हैं।

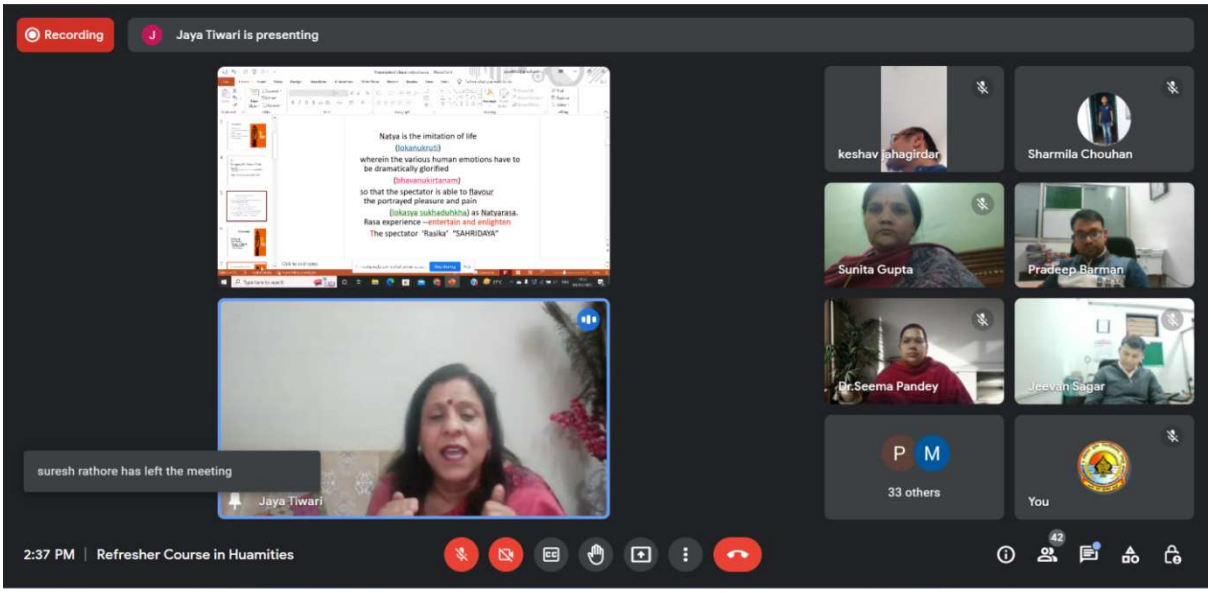

सत्र - चतुर्थ
समय - 16.00 से 17.30

विषय विशेषज्ञ - डॉ. नीरज खरे, प्रोफेसर डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी, बीएचयू, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

विषय - हिंदी कहानी का बदलता परिदृश्य

चेयरपर्सन - डॉ. शर्मिला चौहान, सहायक प्राध्यापक, माता जीजा गवर्नमेंट पीजी गर्ल्स कॉलेज, इंदौर, मध्य प्रदेश

रिपोर्टर - डॉ. राजश्री नायडू, सहायक प्राध्यापक, भारती यूनिवर्सिटी, दुर्ग, छत्तीसगढ़

डॉ. नीरज खरे ने बताया कि कुछ कहानियां में सिर्फ गांव की समस्याएं हैं। जैसे-जैसे वक्त बदलता गया आदमी की चेतना कुछ नया करने की तमन्ना ने, तकनीक आदि ने उसे शहर की तरफ खींचा। यही वजह है कि कुछ कहानियां में सिर्फ शहर की समस्याएं हैं। कुछ कहानियां जो गांव से चलकर शहर तक आती हैं तो कुछ ऐसी भी कहानियां लिखी जा रही है जो शहर से गांव की ओर रुख करती हैं। कभी-कभी गांव और शहर आपस में टकरा उठते हैं। दोनों जगह की अपनी-अपनी मानसिकता है। सोच है, काम करने का तरीका है, चीजों को समझने का ढंग है, देखने का नजरिया है, वर्तमान समय में ज्यादातर कहानी शहर में रहते हैं। शहर का एक अपना मिजाज होता है। शहर में अलग तरह की समस्याएं कठिनाइयों और परिस्थितियों होती हैं, जो गांव की समस्याओं, कठिनाइयों और परिस्थितियों से बिल्कुल भिन्न होती है। कहानियां जो वर्तमान में लिखी जा रही है, कहानियां जिसमें वक्त पानी की तरह बह रहा है, कहानियां जिसमें आगमन कर अपनी ही आगोश में झुलस रहे हैं, कहानियां जिसमें दर्द किसी घुंघरू की शक्ल में नाच उठा है, कहानियां जहां जमीन और आसमान का फर्क खत्म हो जाता है, कहानियां जहां क्षितिज के नाम पर एक हल्की सी लकीर रह जाती है, कहानियां जहां अपनी इतने बड़े हो जाते हैं कि आंखों का दायरा भी कम लगने लगता है, वर्तमान कहानीकारों ने पाठकों की सोच में उतरने का साहस किया है, जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों शामिल हैं। जैसे जैसे समय बदलता गया है वैसे वैसे कहानी का परिदृश्य में भी बदलाव होता गया है।

दिनांक 10.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. सियाराम शर्मा प्रोफेसर, गवर्मेंट कॉलेज, उतई, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़

विषय - संत भक्ति आंदोलन और कबीर की क्रांतिकारी भूमिका

चेयरपर्सन - डॉ. निधि मिश्रा, सहायक प्राध्यापक, गोविंद सारंग गवर्नमेंट लॉ कॉलेज, भाटापारा, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - लक्ष्मीनारायण जलहरे, सहायक प्राध्यापक गवर्नमेंट बृजलाल वर्मा कॉलेज, पलारी, जिला बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़

डॉ. श्याम शर्मा ने बताया कि भक्ति आंदोलन का सूत्रपात संतो के द्वारा ही हुआ है, जिसमें कबीर की भूमिका एक महत्वपूर्ण संत के रूप में की जाती है। कबीर का मूल्यांकन इस आधार पर करना चाहिए जो उनकी समस्त मानवता के प्रति थी। चुपचाप खा पीकर सोने वाले संसार की सदियों की नींद पर जड़ता पर, अन्याय को चुपचाप सहने की आदत पर और भविष्य के प्रति उदासीनता और सोच पर कबीर रात भर जागते हैं और आंसू बहते हैं। वास्तव में कबीर देश की सांस्कृतिक नवजागरण के अग्रदूत थे। कबीर ने अपने समय में जिस युग सत्य का साक्षात्कार किया था। उसे देखकर कबीर जैसा संवेदनशील, निष्ठावान व्यक्ति ही रो सकता है। कबीर के क्रांतिकारी होने का एक कारण यह रुदन भी हो सकता है और कबीर कहते हैं अपने से बाहर निकलो, व्यापक समाज में जा पहुंचो, जहां उच्चतर मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा है। कबीर का सीधा आग्रह सरल जीवन पर है। सारे आडंबर तामझाम से मुक्त सामंती, पुरोहित वादी अलंकरण का निषेध, जो संत विचारधारा की पराकाष्ठा को इंगित करता है।

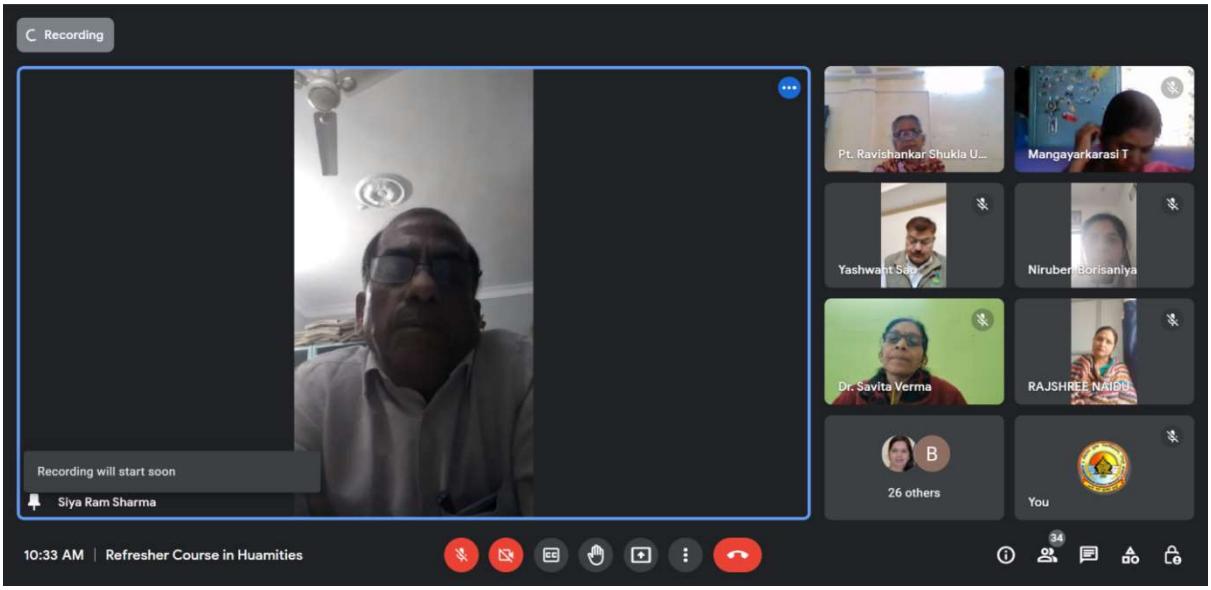

सत्र - द्वितीय

समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी, प्रोफेसर हिंदी विभाग यूनिवर्सिटी ऑफ नार्थ बंगाल

विषय - साहित्य में मानव मूल्य

चेयरपर्सन - डॉ. निधि मिश्रा, सहायक प्राध्यापक, गोविंद सारंग गवर्नमेंट लॉ कॉलेज, भाटापारा, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - लक्ष्मीनारायण जलहरे, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट बृजलाल वर्मा कॉलेज, पलारी, जिला बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़

डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी ने बताया कि साहित्य समाज का दर्पण है, जिसमें समाज का प्रतिबिंब स्पष्ट नजर आता है। साहित्य मानव का ही कृतित्व है और मानवीय चेतना के बहुविध प्रयत्नों में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रत्युत्तर है, इसलिए हम आधुनिक साहित्य के बहुत सारे पक्षियों को या आयामों को केवल तभी बहुत अच्छी तरह समझ सकते हैं जब हम उन्हें मानव मूल्यों के इस व्यापक संकट के संदर्भ में देखने की चेष्टा करें। मानव मूल्य हमारे जीवन में काफी परिवर्तन ला सकते हैं। मानवीय मूल्य हमारे जीवन के लिए अत्यंत ही आवश्यक है जिसके बगैर एक सफल मानवीय आचरण असंभव प्रतीत होता है। साहित्य के अध्ययन से समाज का प्रतिबिंब नजर आता है, जिससे हम अपने जीवन में प्रेरणा लेते हैं। हमें चाहिए कि हम अपने से बड़ों का सम्मान करें। ईमानदारी पूर्वक अपना कार्य करें। सत्य के मार्ग पर चलते हुए बड़ों की बातों का आज्ञा पालन करें, तभी हम मानवीय मूल्यों का पालन अपने जीवन में कर पाएंगे और अपने जीवन को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करेंगे।

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. मधुलता बारा, एसोसिएट प्रोफेसर, भाषा एवं साहित्य अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

विषय - सेमिनार प्रस्तुतीकरण

चेयरपर्सन - डॉ. राजेश्वरी चंद्राकर, सहायक प्राध्यापक, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - अरुणा जे, सहायक प्राध्यापक, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु

सेमिनार प्रस्तुतीकरण की इस सत्र में समस्त प्रतिभागियों को एक निर्धारित विषय पर सेमिनार दिया गया था । सभी प्रतिभागियों को निर्धारित विषय निर्धारित समय में प्रस्तुत करना था, जिसमें तृतीय सत्र में समस्त प्रतिभागियों ने बारी-बारी से अपना सेमिनार प्रस्तुतीकरण दिया । समस्त प्रतिभागियों के सेमिनार प्रस्तुतीकरण के पश्चात विषय विशेषज्ञ द्वारा फीडबैक दिया गया, जिसके माध्यम से समस्त प्रतिभागियों को विषय की बारीकियों एवं इसके महत्व, उपयोगिता को भली-भांति जानने एवं समझने का अवसर प्राप्त हुआ । मूल्यांकनकर्ता के इस मार्गदर्शन से समस्त प्रतिभागियों को अकादमिक लाभ निश्चित रूप से प्राप्त हुआ ।

सत्र - चतुर्थ
समय - 16.00 से 17.30

विषय विशेषज्ञ - डॉ. मधुलता बारा, एसोसिएट प्रोफेसर, भाषा एवं साहित्य अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - सेमिनार प्रस्तुतीकरण

चेयरपर्सन - डॉ. राजेश्वरी चंद्राकर, सहायक प्राध्यापक, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - अरुणा जे, सहायक प्राध्यापक, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु

सेमिनार प्रस्तुतीकरण की इस सत्र में समस्त प्रतिभागियों को एक निर्धारित विषय पर सेमिनार दिया गया था । सभी प्रतिभागियों को निर्धारित विषय निर्धारित समय में प्रस्तुत करना था, जिसमें तृतीय सत्र में समस्त प्रतिभागियों ने बारी-बारी से अपना सेमिनार प्रस्तुतीकरण दिया। समस्त प्रतिभागियों के सेमिनार प्रस्तुतीकरण के पश्चात विषय विशेषज्ञ द्वारा फीडबैक दिया गया, जिसके माध्यम से समस्त प्रतिभागियों को विषय की बारीकियों एवं इसके महत्व, उपयोगिता को भली-भांति जानने एवं समझने का अवसर प्राप्त हुआ। मूल्यांकनकर्ता के इस मार्गदर्शन से समस्त प्रतिभागियों को अकादमिक लाभ निश्चित रूप से प्राप्त हुआ।

दिनांक 12.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. चितरंजन कर, भूतपूर्व प्रोफेसर, भाषा एवं साहित्य अध्ययन शाला पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - भाषा शिक्षण

चेयरपर्सन - केशव पी, सहायक प्राध्यापक, श्री के .एच . पाटिल गवर्नमेंट फर्स्ट ग्रेड कॉलेज, हुलकोटि, कर्नाटक

रिपोर्टर - नम्रता ध्रुव, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट नवीन कॉलेज, नवापारा रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. चितरंजन कर ने हिन्दी एवं अंग्रेजी द्वि-भाषा का प्रयोग करते हुए अपने विषय भाषा शिक्षण पर सहज, सरल तथा विस्तृत जानकारी साझा की। डॉ. कर कहते हैं कि भाषा सीखी नहीं जाती, आत्मसात् की जाती है, ग्रहण की जाती है। ञ्शश द्मठ्ठश2 ड्ड द्यड्डठ्ठद्दह्वड्डद्दद्ग ह्लश द्मठ्ठश2 ड्डड्ढशह्वह्ल द्यड्डठ्ठद्दह्वड्डद्दद्ग. हमें अपने भाषा के प्रति दुराग्रह या पूर्वाग्रह को दूर करना चाहिए। डॉ. कर ने कहा कि भाषा के तीन दृष्टिकोण होते हैं - 1. संज्ञानात्मक, 2. अनुभववादी और 3. व्यवहारवादी । उन्होंने भाषा के इन तीन दृष्टिकोणों का विशद वर्णन किया । ष्टशद्ग्ठ्ठद्ग्ठ्ठद्गह्य ड्डह्लद्ग 2द्बह्लद्ध ह्यशष्द्बड्डद्य ष्शठ्ठह्लड्डष्ह्ल ड्डठ्ठस्र ह्यद्बद्बद्बद्यड्डह्म्द्बह्ल4 ड्ढद्गह्ल2द्गद्गठ्ठ द्बद्बह्म्ह्यह्ल द्यड्डड्ढद्दह्वड्डद्दद्ग ड्डठ्ठस्र ह्यद्गष्शठ्ठस्र द्यड्डठ्ठद्दह्वड्डद्दद्ग पर ध्यानाकर्षित कराया। डॉ. कर ने भाषा शिक्षण में एप्रोच, प्रणाली और तकनीक अर्थात् द्बद्बश्चद्यद्गद्बद्गठ्ठह्लड्डह्लद्बशठ्ठ को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से विस्तारपूर्वक वर्णित किया।

सत्र - द्वितीय
समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. गीता नायक, **प्रोफेसर**, डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी, विक्रम यूनिवर्सिटी, उज्जैन, मध्यप्रदेश

विषय - अवाचिक भाषा

चेयरपर्सन - केशव पी, **सहायक प्राध्यापक**, श्री के .एच . पाटिल गवर्नमेंट फर्स्ट ग्रेड कॉलेज, **हुलकोटि**, कर्नाटक

रिपोर्टर - नम्रता ध्रुव, **सहायक प्राध्यापक**, गवर्नमेंट नवीन कॉलेज, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. **गीता नायक ने अपने विषय अवाचिक भाषा पर अति रोचक जानकारी प्रदान की**। उन्होनें कहा कि उच्चारण रहित अर्थात् ध्वनि रहित सांकेतिक भाषा के माध्यम से भावों की सशक्त अभिव्यक्ति को अवाचिक भाषा कहा जाता है। सृष्टि के आरंभ में अवाचिक भाषा ही अस्तित्व में रहा होगा। उन्होनें अवाचिक भाषा पर सविस्तार चर्चा करते हुए कहा कि अवाचिक भाषा के चार अंग होते हैं - आंगिक, वाचिक, सात्विक और आहार्य। भाषा विदुषी डॉ. **गीता नायक ने इन अवाचिक भाषा के चार अंगों को विभिन्न उदाहरणों और कविकारों की पंक्तियों के माध्यम से** सटीक वर्णन प्रस्तुत किया। उन्होंने आगे कहा कि अवाचिक भाषा कभी-कभी वाचिक भाषा का प्रतिस्थापक बन जाती है, अर्थ संप्रेषणीय होती है, अर्थ की सटीक प्रतीती कराती है, मनोचिकित्सक के लिए सहायक होती है। अवाचिक संप्रेषण सार्वभौमिक होती है। आंगिक क्रियाओं से सहज भावाभिव्यक्ति की जा सकती है। उन्होनें अंत में आंगिक भाषा और पैराभाषा के विभिन्न आयामों को उदाहरणमय प्रस्तुत किया।

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - प्रोफेसर रीता चौधरी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

विषय - भारतीय संस्कृति स्त्री प्रश्न और हिंदी का महिला लेखन

चेयरपर्सन - जीवन लाल गायकवाड़, सहायक प्राध्यापक, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - आस्था दीवान, **सहायक प्राध्यापक**, समाधान महाविद्यालय, बेमेतरा, छत्तीसगढ़

प्रोफेसर रीता चौधरी ने विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और परंपरा के लिये प्रसिद्ध देश है। ये विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है। भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचार, तहज़ीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएँ और मूल्य आदि हैं। अब जबकि हरेक की जीवन शैली आधुनिक हो रही है, भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने एक अनोखा देश, 'भारत' बनाया है। प्रत्येक युग में, सभ्यताओं के आवर्तन, विवर्तन में, प्रत्येक संस्कृति ने यह उद्घोषित किया है कि नारी सृष्टि की नियामिका शक्ति है, अखिल ब्रहमाण्ड की आधारशिला है। अखिल ब्रह्माण्ड को नियोजित, नियमित व संचालित करने वाले, अपने दिव्य स्पंदनों से स्पंदित करने वाले उस विधाता की मूल प्रतिकृति नारी है। देश में महिलाओं की स्थिति ने पिछली कुछ सदियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोक सभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं। नारी अपनी अनुभूतियों और संवेदनाओं का कलम के माध्यम से जब पहले पहल 1906-07 में कागज की जमीन पर उकेरा तब उत्कृष्ट साहित्य सृजन कर सबको चकित कर दिया। पाठकों ने सराहना की तो साहित्य समीक्षक और लेखकों द्वारा नारी को साहित्यकारों की पंक्ति में बैठाना गवारा नहीं हुआ। महिला द्वारा हुई अभिव्यक्तियों को नकारने की कोशिश की गई।

सत्र - चतुर्थ
समय - 16.00 से 17.30

विषय विशेषज्ञ - श्री गिरीश पंकज, पत्रकार एवं लेखक

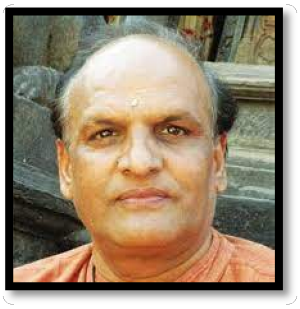

विषय - व्यंगय की प्रासंगिकता कल आज और कल

चेयरपर्सन - जीवन लाल गायकवाड़, सहायक प्राध्यापक, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - आस्था दीवान, सहायक प्राध्यापक, समाधान महाविद्यालय, बेमेतरा, छत्तीसगढ़

श्री गिरीश पंकज अपने विषय को स्पष्ट करते हुए बताया कि हिन्दी साहित्य में व्यंग्य सदियों पूर्व से विद्यमान रहा है कबीर के पूर्व भी हिन्दी कविता में व्यंग्य वक्रोक्ति के रूप में विद्यमान था। व्यंग्य को हथियार बनाकर सामाजिक विसंगतियों और पाखंड को बेनकाब करने का कार्य कबीर ने किया था। तब से लेकर आज तक व्यंग्य कविता के अतिरिक्त गद्य की अनेक विधाओं में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा चुका है। आज के परिवेश में व्यंग्य साहित्यिक विधाओं के केन्द्र में है। आधुनिक युग में भारतेंदु ने व्यंग्य को अंग्रेजों के खिलाफ प्रयुक्त किया। अंग्रेजों के काले कारनामों को आम जनता के सामने लाने के लिए अपनी मुकरियों में व्यंग्य का सफल प्रयोग किया। अंधेर नगरी नाटिका में भी व्यंग्य है। भारतेंदु की रचनाओं का व्यंग्य कालजयी और प्रभावपूर्ण इसलिये हैं, क्योंकि व्यवस्था की त्रुटियों और विसंगतियों पर तीखे किन्तु शिष्ट तेवर में प्रहार करता है। भारतेंदु के बाद द्विवेदी युग में भी अंग्रेजों के शोषण, सामाजिक कुरीतियाँ, धर्माडम्बरों, पश्चिम के अंधानुकरण और फैशन-परस्ती पर हास्य-व्यंग्य से प्रहार करने वाली अनेक कविताएँ लिखी गयीं। महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रताप नारायण मिश्र और बालमुकुंद गुप्त द्विवेदी युग के प्रमुख व्यंग्यकार हैं। आजकल के कुछ व्यंग्य लेखों में उतना पैनापन नहीं आ पाया है, इस कारण वे हास्य लेख बन गये हैं। यद्यपि ऐसे व्यंग्य लेखों की संख्या कम ही है।

दिनांक 13.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. नंद किशोर पांडे, प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी, राजस्थान यूनिवर्सिटी, जयपुर राजस्थान

विषय - भाषा साहित्य और संस्कृति राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में

चेयरपर्सन - डॉ. मनप्पा कृष्णा होन्नाकांबले, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट फर्स्ट ग्रेड कॉलेज, होलीवाल, कर्नाटक

रिपोर्टर - डॉ. सीमा पांडे, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट बिलासा गर्ल्स पीजी कॉलेज, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

रिसोर्स पर्सन डॉ. **नंद किशोर पांडेय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भारतीय भाषा** कला एवं संस्कृति क्या महत्व है। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से भारतीय शिक्षा पद्धति को भारत की गौरव के रूप में प्रतिष्ठित करना है।** छात्रों का सर्वांगीण विकास करते हुए रचनात्मकता को विकसित करना, साथ ही शुद्ध प्रवृत्ति का विकास करना है। रिसोर्स पर्सन ने इस संपूर्ण वक्तव्य में रोचक अख्यानो एवं **प्रसंगों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत किया व अपने धाराप्रवाह वचनों से ज्ञान का** अभीसिंचन इस पूरे सत्र में किया, **जो श्रोताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक रहा।**

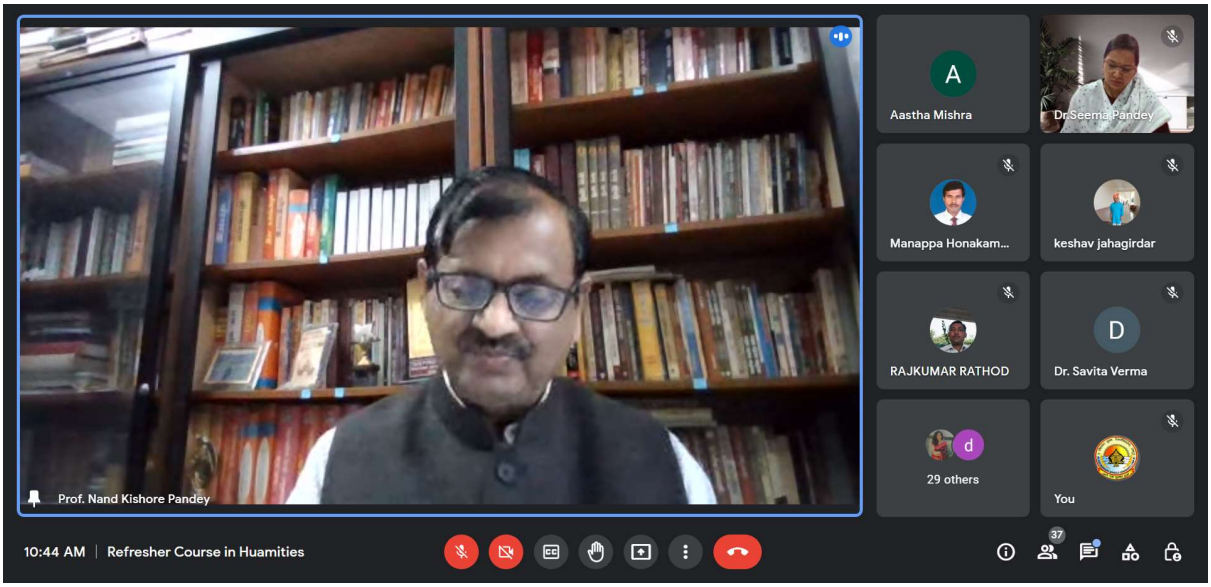

सत्र - द्वितीय

समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. रूपा गुप्ता, **प्रोफेसर डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी**, यूनिवर्सिटी बुर्धवान, **पश्चिम बंगाल**

विषय - नवजागरण और स्त्री प्रश्न

चेयरपर्सन - डॉ. **मनप्पा कृष्णा होन्ना कांबले**, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट फर्स्ट ग्रेड कॉलेज, हॉलीवाल, कर्नाटक

रिपोर्टर - डॉ. सीमा पांडे, **सहायक प्राध्यापक**, गवर्नमेंट बिलासा गर्ल्स पीजी कॉलेज, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

रिसोर्स पर्सन डॉ. **रूपा गुप्ता रोचक व्याख्यान शैली के माध्यम से भारतीय इतिहास भारतीय नवजागरण** काल में स्त्री की दशा के मौलिक चित्रण में सती प्रथा विधवा पुनर्विवाह पर व्यापक रूप से अपना विचार रखी। इन **प्रथाओं की समकालीन समय में आवश्यकता के कारण एवं तत्कालीन परिस्थितियों में इन प्रथाओं की वास्तविक** स्थिति का चित्रण किया। **उद्धरण शैली के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन स्त्रियों की दशा का मार्मिक एवं करुणामय रेखाचित्र प्रस्तुत किया साथ ही नवजागरण काल के अंतर्गत बांग्ला नवजागरण एवं हिंदी नवजागरण को सम्मिलित रूप से अपने ओजस्वी व्याख्यान में स्पष्ट किया।** डॉ. गुप्ता का संपूर्ण वक्तव्य ओजस्वी एवं जीवंत के साथ-साथ अत्यंत ही प्रेरणादायक रहा।

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. बिहारी लाल साहू, भूतपूर्व प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी किरोड़ीमल गवर्नमेंट कला एवं विज्ञान कॉलेज, रायगढ़, छत्तीसगढ़

विषय - छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति

चेयरपर्सन - डॉ. प्रकाश चंद्र सतपथे, सहायक प्राध्यापक, रामचंडी महाविद्यालय, सरायपाली, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. निरूबेन हरसुखभाई, सहायक प्राध्यापक, बोरीसानिया आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, बाबरा, गुजरात

डॉ. बिहारी लाल साहू ने छत्तीसगढ़ के गौरवपूर्ण इतिहास को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ अपनी संस्कृति परंपरा एवं रीति-रिवाजों के कारण पूरे विश्व में जाना जाता है। छत्तीसगढ़ी भाषा अत्यंत ही मधुर एवं सुहावनी है, जिसमें प्रेम एवं अपनत्व कूट-कूट कर भरा हुआ है, जिससे यह पता चलता है कि यहां की संस्कृति कितनी श्रेष्ठता को अपने में समाहित किया हुआ है। छत्तीसगढ़ी दो करोड़ लोगों की भाषा है। यह पूर्वी हिंदी की एक प्रमुख बोली है। एक दूसरे के दिल को छू लेने वाली यह छत्तीसगढ़ी भाषा इस राज्य की संपर्क भाषा है, जिसका अपना स्वयं का समृद्ध साहित्य एवं व्याकरण है। इसको जितना ही हम सहेजेगें उतना ही इसका स्तर समृद्ध और व्यापक होता जाएगा। छत्तीसगढ़ की भाषा एवं संस्कृति को सहेजने का व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। विविध आयोजन संस्कृति को सहेजने व उसके उत्थान हेतु किए जा रहे हैं, जिसे लेकर छत्तीसगढिया के मन में काफी उत्साह स्पष्ट हो रहा है। यहां कर्मा, सुआ, ददरिया, पंथी जैसे मधुर गीत एवं उसकी थाप लोगों को उत्साहित करते हैं।

सत्र - चतुर्थ
समय - 16.00 से 17.30

विषय विशेषज्ञ - डॉ. अवधेश कुमार, प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

विषय - साहित्य संस्कृति और समाज

चेयरपर्सन - डॉ. प्रकाश चंद्र सतपथे, सहायक प्राध्यापक, रामचंडी महाविद्यालय, सरायपाली, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. निरूबेन हरसुखभाई बोरीसानिया , सहायक प्राध्यापक, आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, बाबरा, गुजरात

निर्धारित विषय पर प्रकाश डालते हुए डॉ. अवधेश कुमार ने बताया कि साहित्य संस्कृति और समाज परस्पर एक दूसरे से संबंधित हैं व आपस में अन्योन्याश्रित संबंध है। किसी भी एक अंग की उपेक्षा करके इस चक्र को पूर्ण नहीं माना जा सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि किस तरह से मानव ने आदिम युग से लेकर के आधुनिक युग तक सफर किया है। मनुष्य अपनी मानव सुलभ भावनाओं को संतुष्ट करने के लिए, ह्रदय में उठने वाले भावनाओं को अभिव्यक्त प्रदान करने के लिए अनेक साहित्यिक विधाओं का भी आश्रय लेना पड़ा है। यहीं से आरंभ होता है सृजन जिसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से झलक होती है, उसकी भाषा की जो साहित्य का अविभाज्य अंग है। किसी भी देश का साहित्य उठा कर के देख लीजिए उसमें सुगंध होगी जो साहित्य संस्कृति व समाज को आपस में जोडक़र एकता के सूत्र में पिरोती है। संस्कारों से भाषा में अपेक्षित सुधार हो सकता है, भाषा से संस्कृति का सुधार संभव है,और संस्कृति से समाज में अपेक्षित परिवर्तन संभव है।

दिनांक 14.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. सविता सिंह, सहायक प्राध्यापक, डिपार्टमेंट ऑफ इंग्लिश, गवर्नमेंट नागार्जुन पोस्ट ग्रैजुएट कॉलेज ऑफ साइंस, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - धार्मिकता एवं साहित्य

चेयरपर्सन - डॉ. निधि गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट जी एन ए पीजी कॉलेज, भाटापारा, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. हेमलता एस कंचनकर, सहायक प्राध्यापक, पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

डॉ. सविता ने विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिंदी साहित्य के आदिकाल में रचित सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य को धार्मिक साहित्य के अंतर्गत रखा गया है। साहित्य में जन भाषा की प्रतिष्ठा के लिए भी साहित्यकारों ने व्यापक संघर्ष किया है। सिद्धनाथ और जैन साधक घोषित रूप में रचनाकार नहीं थे। वह तो सामाजिक विषमता के खिलाफ आवाज उठा रहे थे। इसी प्रक्रिया को वे अपने अनुभव में व्यक्त कर रहे थे और यही अनुभव उनका साहित्य बन गया। इसका प्रभाव आगे आने वाले साहित्य पर पड़ा। आदिकालीन साहित्य का एक बड़ा भाग धर्माश्रित साहित्य है। इस साहित्य के महत्व को सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टि से ठुकराया नहीं जा सकता। यह साहित्य उस युग की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ-साथ धार्मिक विश्वासों का वर्णन करता है। भक्ति काल में भी विपुल धार्मिक साहित्य की रचना की गई जिसने समाज में आपसी प्रेम बंधुत्व एवं भाईचारा का बीजारोपण करते हुए समाज को मानवीय दिशा प्रदान किया। इन साहित्यों ने आदिकाल भक्तिकाल एवं रीतिकाल को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

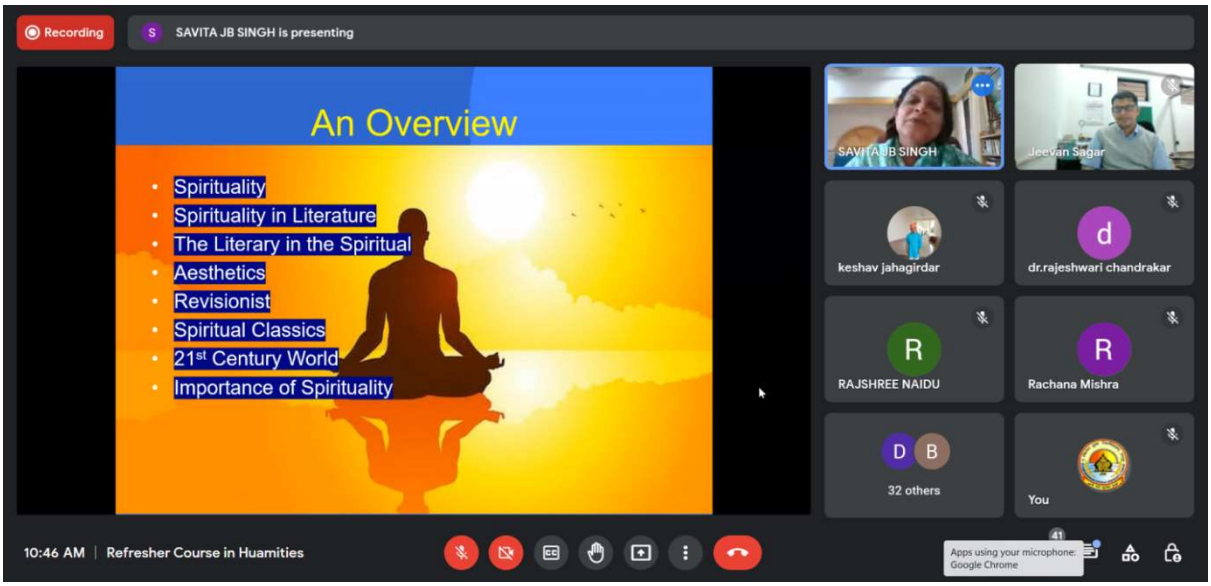

सत्र - द्वितीय
समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. सूरज बहादुर थापा, प्रोफेसर लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

विषय - उत्तर आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी साहित्य समाज और संस्कृति

चेयरपर्सन - डॉ. निधि गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट जी एन ए पीजी कॉलेज, भाटापारा, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. हेमलता एस कंचनकर, सहायक प्राध्यापक, पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

विषय विशेषज्ञ डॉ. **सूरज बहादुर थापा ने विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उत्तर आधुनिकता** 1960 के दशक में अस्तित्ववाद के बाद प्रांत **में सर्वाधिक प्रभावित करने वाला साहित्य चिंतन है**। 1970 में जो परिवर्तन आया उस **परिवर्तन को नाम दिया गया उत्तर आधुनिकता**। इस परिवर्तन का बुद्धिजीवी विचारकों और चिंतकों ने अध्ययन किया और उस पर अपने विचार मत प्रकट किए। इसकी व्यापकता ने संपूर्ण विश्व के साहित्य एवं समीक्षा प्रणाली को परिवर्तित किया। उत्तर आधुनिकता ने साहित्य चिंतन की नई-वैचारिक पद्धतियां, प्रविधियां, शैलियां विकसित की है। **वैचारिक पद्धतियों में संस्कृतिक अध्ययन क्षेत्र नव इतिहासवाद**, नवमिथकवाद, अधीनस्थों का अध्ययन,**नारीवाद अश्वेत पीड़ा का अध्ययन, दलित दमित साहित्य का अध्ययन आदि को जगह मिलती है**। उत्तर आधुनिकतावाद का प्रभाव संस्कृति एवं समाज पर व्यापक रूप से पड़ा, जिसके स्वरूप विश्व संस्कृति का उदय हुआ एवं सामाजिक नीतियों नियमों में प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिला।

सत्र - तृतीय

समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. सुधीर शर्मा, हेड ऑफ डिपार्टमेंट, हिंदी कल्याण पोस्ट ग्रैजुएट कॉलेज, भिलाई, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़

विषय - प्रोजेक्ट प्रस्तुतीकरण

चेयरपर्सन - रचना मिश्रा, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट जे योगानंदम छत्तीसगढ़ कॉलेज, रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. नीता शर्मा, सहायक प्राध्यापक, श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जूनवानी, भिलाई, छत्तीसगढ़

प्रोजेक्ट प्रस्तुतीकरण के इस तृतीय सत्र में इस प्रतिभागियों को भी एक निर्धारित विषय पर प्रोजेक्ट दिया गया था। सभी प्रतिभागियों को निर्धारित विषय पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत करना था, जिसमें तृतीय सत्र में समस्त प्रतिभागियों ने अपना प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया। समस्त प्रतिभागियों के प्रोजेक्ट प्रस्तुतीकरण के पश्चात विषय विशेषज्ञ द्वारा प्रतिपुष्टि दिया गया, **जिसके माध्यम से समस्त प्रतिभागियों को विषय की बारीकियों** एवं इसके महत्व उपयोगिता भली-भांति जानने एवं समझने का अवसर प्राप्त हुआ। मूल्यांकन कर्ता का यह मार्गदर्शन समस्त प्रतिभागियों के लिए काफी महत्वपूर्ण रहा।

सत्र - चतुर्थ

समय - 16.00 से 17.30

विषय विशेषज्ञ - डॉ. सुधीर शर्मा, हेड ऑफ डिपार्टमेंट, हिंदी कल्याण पोस्ट ग्रैजुएट कॉलेज, भिलाई, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़

विषय - प्रोजेक्ट प्रस्तुतीकरण

चेयरपर्सन - रचना मिश्रा, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट जे योगानंदम छत्तीसगढ़ कॉलेज, रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. नीता शर्मा, सहायक प्राध्यापक, श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जूनवानी, भिलाई, छत्तीसगढ़

प्रोजेक्ट प्रस्तुतीकरण के इस तृतीय सत्र में इस प्रतिभागियों को भी एक निर्धारित विषय पर प्रोजेक्ट दिया गया था। सभी प्रतिभागियों को निर्धारित विषय पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत करना था, जिसमें तृतीय सत्र में समस्त प्रतिभागियों ने अपना प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया। समस्त प्रतिभागियों के प्रोजेक्ट प्रस्तुतीकरण के पश्चात विषय विशेषज्ञ द्वारा प्रतिपुष्टि दिया गया, जिसके माध्यम से समस्त प्रतिभागियों को विषय की बारीकियों एवं इसके महत्व उपयोगिता भली-भांति जानने एवं समझने का अवसर प्राप्त हुआ। मूल्यांकन कर्ता का यह मार्गदर्शन समस्त प्रतिभागियों के लिए काफी महत्वपूर्ण रहा।

दिनांक 15.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ.आरती परगनिहा, प्रोफेसर, जीव विज्ञान अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल

चेयरपर्सन - डॉ. गीता लाखोत्रा, सहायक प्राध्यापक, पंडित प्रेमनाथ डोगरा गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, सांबा, जम्मू एंड कश्मीर

रिपोर्टर - डॉ. दीपा रागा, सहायक प्राध्यापक, बी भी भूमरेड्डी कॉलेज ऑफ आर्ट्स साइंस एंड कॉमर्स, बिदार, कर्नाटक

विषय विशेषज्ञ डॉ. आरती परगनिहा ने विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह एक ऐसी समिति होती है जो संस्थानों को उनके कार्य प्रक्रिया में सुधार हेतु और सीखने के उद्देश्यों और परिणामों को प्राप्त करने में मदद करती है। चूंकि गुणवत्ता में वृद्धि एक सतत प्रक्रिया है, इसलिए उन्नत संस्थान की प्रणाली का एक हिस्सा बन जाता है और गुणवत्ता वृद्धि और निरंतरता के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में काम करता है। आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ, वास्तव में, संस्थागत स्तर पर एक गुणवत्ता संस्कृति के निर्माण और सुनिश्चित करने के लिए एक तंत्र के रूप में माना जाता है। कुशल और समय पर पूरी हो सकने वाली कार्य प्रक्रियाएं बनाना।

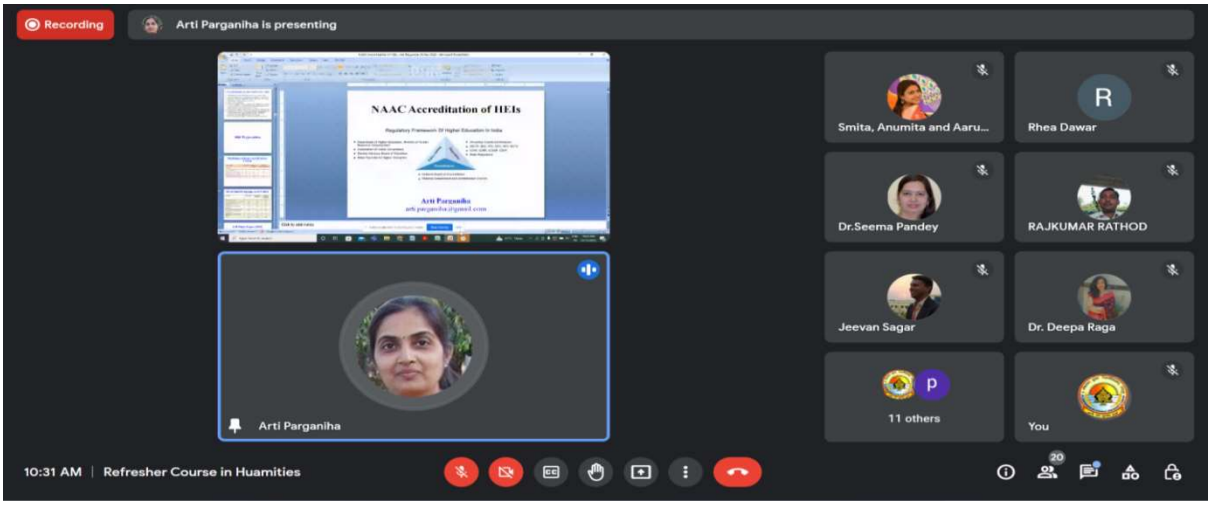

सत्र - द्वितीय

समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. दिनेश कुशवाहा, प्रोफेसर एंड हेड, ए पी एस यूनिवर्सिटी, रीवा, मध्य प्रदेश

विषय - साहित्य में स्त्री विमर्श

चेयरपर्सन - डॉ. गीता लखोत्रा, सहायक प्राध्यापक, पंडित प्रेमनाथ डोगरा गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, सांबा, जम्मू एंड कश्मीर

रिपोर्टर - डॉ. दीपा रागा, सहायक प्राध्यापक, बी भी भूमरेड्डी कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स साइंस एंड कॉमर्स, बिदार, कर्नाटक

डॉ. दिनेश कुशवाहा ने विषय को स्पष्ट करते हुए बताया कि हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएं देखने को मिलता है। हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री - विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कडिय़ा नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है। अत: स्त्री - विमर्श की शुरूआती गुंज पश्चिम में देखने को मिला। सन् 1960 ई. के आस - पास नारी सशक्तिकरण जोर पकड़ी जिसमें चार नाम चर्चित हैं। उषा प्रियम्वदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी एवं शिवानी आदि लेखिकाओं ने नारी मन की अंतर्द्वन्द एवं आप बीती घटनाओं को उकरेना शुरू किए और आज स्त्री - विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा है। आठवें दशक तक आते - आते यही विषय एक आन्दोलन का रूप ले लिया जो शुरूआती स्त्री - विमर्श से ज्यादा शक्तिशाली सिद्ध हुआ। नारी मुक्ति की गुंज अब देह मुक्ति के रूप में परिलक्षित होने लगा । उन्होंने बताया कि साहित्य में स्त्री विमर्श के नाम पर स्त्री देह को बेचने व स्त्री को सेक्सुअल आब्जेक्ट अथवा मार्केट के उत्पाद के रूप में तब्दील कर दिए जाने की जो पूँजीवादी पितृसत्तात्मक बाजारवादी रणनीति काम कर रही है उस मानसिकता से यह मुक्त क्यों नहीं है ? उसको पहचान कर उसके सक्रिय प्रतिरोध से ही वास्तविक स्त्री विमर्श संभव है।

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. अरुण होता, **प्रोफेसर वेस्ट बंगाल स्टेट यूनिवर्सिटी,** बारासत कोलकाता, पश्चिम बंगाल

विषय - कोरोना काल का साहित्य पर प्रभाव

चेयरपर्सन - डॉ. स्मिता शर्मा, **सहायक प्राध्यापक सेंटर फॉर बेसिक साइंस पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय** रायपुर छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - श्रीमती रूप कुमारी धुर्वा, **सहायक प्राध्यापक गवर्नमेंट कमला देवी राठी महिला पीजी** कॉलेज राजनांदगांव छत्तीसगढ़

डॉ. अरुण होता ने बताया कि कोरोना काल वैश्विक संक्रमण का काल था, जिससे पूरा विश्व प्रभावित था। कई लोगों ने इस समय अपनों को खो दिया। जिजीविषा को एक बड़ा सहारा साहित्य से मिलता है। साहित्य हमें राह दिखाता है। 2021 में जब पत्रिकाएँ लगभग बंद थीं, प्रिंटिंग व्यवसाय दम तोड़ गया था, अखबारों की बिक्री-विज्ञापन मृतप्राय था। ऐसे समय में साहित्य ने अपने लिए नए-नए रास्ते निकाले। साहित्य में नए अंकुर फूटे, नई शाखाएँ विकसित हुईं। नए माध्यम सामने आए। अब 2022 का साल समाप्त हो रहा है ऐसे में जब हम पूरे साल के साहित्यिक परिदृश्य पर नजर डालते हैं, उसका मूल्यांकन करते हैं तो पाते हैं कि हमने इस साल काफ़ी कुछ खोया है, साथ ही बहुत कुछ पाया है। इस बीच साहित्य हमें बराबर कोरोना से लड़ने की ताकत देता रहा। तकनीक ने भी हमारा भरपूर साथ दिया। इस साल प्रिंट मीडिया की अनुपस्थिति में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया खूब सक्रिय रहा। लॉकडाउन के कारण साहित्यिक समारोह-सेमीनार चाह कर भी करना संभव न था, इसे संभव बनाया गूगल मीट और ज़ूम, फ़ेसबुक लाइव, व्हाट्सएप, ट्विटर, इंस्टाग्राम, ई-मेल ने। इससे लाभ हुआ अब हर साहित्यिक कार्यक्रम लोकल के स्थान पर ग्लोबल होने लगा। हम स्थानीय और वैश्विक दोनों एक साथ हो गए। घर बैठे लोग देश-विदेश से जुड़ने लगे काव्य चर्चा, काव्य गोष्ठियों, कथा पाठ, रचनाकार से मिलना-जुलना, पुस्तक समीक्षाएँ, विचार-विमर्श आम बात हो गए। अब स्कूल, कॉलेज, साहित्यिक संस्थाएँ सब आए दिन प्रोग्राम करने लगीं, एक दिन में कई वेबीनार में शामिल होना संभव होने लगा।

सत्र - चतुर्थ
समय - 16.00 से 17.30

विषय विशेषज्ञ - प्रोफेसर दिलीप सिंह, प्रोफेसर इंदिरा गांधी नेशनल ट्राईबल विश्वविद्यालय, अमरकंटक , मध्यप्रदेश

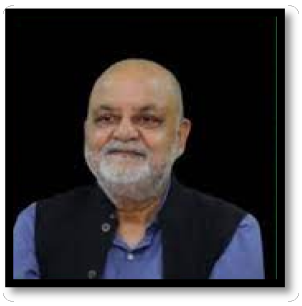

विषय - भाषा और संस्कृति का संबंध

चेयरपर्सन - डॉ. स्मिता शर्मा, **सहायक प्राध्यापक,** सेंटर फॉर बेसिक साइंस, **पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,** रायपुर, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - श्रीमती रूप कुमारी धुर्वा, सहायक प्राध्यापक, **गवर्नमेंट कमला देवी राठी महिला पीजी कॉलेज,** राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

प्रोफेसर दिलीप सिंह ने विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा की भाषा और संस्कृति का संबंध अटूट है। भाषा की अनुपस्थिति में संस्कृति अपनी यात्रा को सुव्यवस्थित नहीं कर सकती है। वास्तव में भाषा एक संस्कृति है, उसके भीतर भावनाएं, विचार और सदियों की जीवन पद्धति समाहित होती है। मातृभाषा ही परम्पराओं और संस्कृति से जोड़े रखने की एक मात्र कड़ी है। राम-राम या प्रणाम आदि सम्बोधन व्यक्ति को व्यक्ति से तथा समष्टि से जोडने वाली सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां हैं। उदाहरण के लिए प्रथम सम्बोधन के समय हम हाथ मिलाकर गुड मार्निंग नहीं करते हैं, बल्कि हाथों को जोडक़र राम या अन्य भगवान का नामोच्चारण करते हैं। यह नामोच्चारण एक तरफ हमें मर्यादा अथवा सम्बन्धित भगवान की विशेषता के कारण अर्जित युग-युगान्तकारी ख्याति की याद दिलाता है तो दूसरी तरफ राम जैसे शब्दों का उच्चारण हमारी अन्त:स्रावी (एंडोक्राइन) ग्रंथियों योग की भाषा में चक्रों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। **वैज्ञानिकों ने अध्ययन के बाद सिद्ध किया कि स्वस्तिक से सर्वाधिक सकारात्मक ऊर्जा निकलती है** और यह विश्व की समस्त धार्मिक या अन्य आकृतियों के मुकाबले अनेक गुना ऊर्जा देने वाली आकृति है, जिससे एक मिलियन बोविस ईकाई की ऊर्जा निकलती है।

दिनांक 16.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. दिनेश चंद्रा, **प्रोफेसर,** उत्तराखंड संस्कृति विश्वविद्यालय, उत्तराखंड

विषय - अनुवाद की संस्कृति शब्दावली और संप्रेषणीयता

चेयरपर्सन - अरुणा जे, सहायक प्राध्यापक, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु

रिपोर्टर - डॉ. राठौड़ राजकुमार थवारा, सहायक प्राध्यापक, कविरत्न कालिदास डिग्री कॉलेज, बिदार, कर्नाटक

डॉ. **दिनेश चंद्रा ने विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा की आज के युग को यदि अनुवाद का युग कहा जाए तो** कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। ज्ञान-**विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति होने से आज विश्व सिमट कर छोटा होता जा रहा है।** कई भाषा-**भाषी के लोगों और समुदायों के साथ हम जुड़ते जा रहे हैं।** जिससे हमें 'विश्वबंधुत्व' की भावना को **विकसित करने में सहायता प्राप्त हो रहा है। प्राचीन भारत में गुरु की बातों को सुनकर शिष्य उसे दोहराता था।** यही अनुवाद की प्रारंभिक परंम्परा थी। **हिन्दी में अनुवाद का प्रारंभ संस्कृत के प्राचीन साहित्य से होता है।** इसके बाद बौद्ध, जैन और इस्लामी ग्रंथों **का हिन्दी अनुवाद हुआ, लेकिन श्रीमद्भागवत को मुंशी सदासुख लाल कृत 'सुखसागर' खूब लोकप्रिय अनुवाद माना जाता है।** उसी प्रकार लल्लूजीलाल का 'प्रेमसागर' **खड़ी बोली में प्रचलित अनुवाद है।** अनुवाद को 'सांस्कृतिक सेतु' कहा गया है। मानव-मानव को एक दूसरे के निकट लाने में, मानव जीवन को अधिक **सुखी और सम्पन्न बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है।** 'भाषाओं की अनेकता' **मनुष्य को एक दूसरे से अलग ही** नहीं करती, उसे कमजोर, **ज्ञान की दृष्टि से निर्धन और संवेदन शून्य भी बनाती है।** 'विश्वबंधुत्व की स्थापना' एवं 'राष्ट्रीय एकता' **को बरकरार रखने की दृष्टि से अनुवाद एक तरह से सांस्कृतिक सेतु की तरह महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा** कर रहा है।

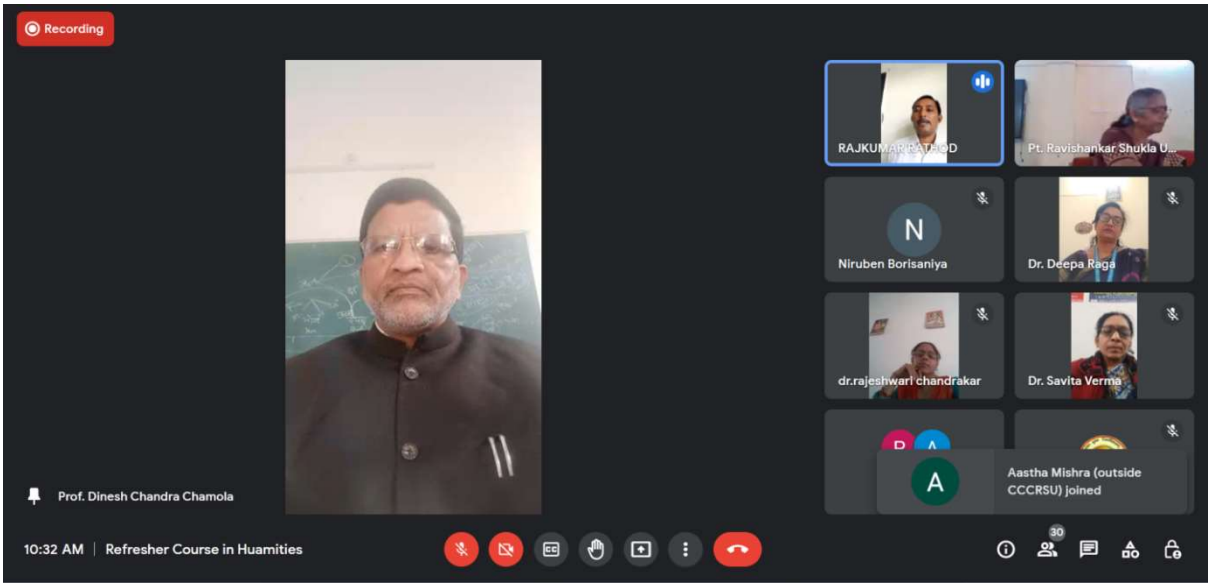

सत्र - द्वितीय
समय - 12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - प्रोफेसर ए के पालीवाल, डिपार्टमेंट ऑफ इंग्लिश, **गवर्नमेंट हमीदिया कॉलेज**, भोपाल, मध्यप्रदेश

विषय - नए प्रतिमानों और एनईपी 2020 के प्रिज्म के माध्यम से ग्रंथों की पुनर्व्याख्या

चेयरपर्सन - डॉ. अरुणा जे, सहायक प्राध्यापक, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु

रिपोर्टर - डॉ. राठौड़ राजकुमार थवारा, सहायक प्राध्यापक, कविरत्न कालिदास डिग्री कॉलेज, बिदार, कर्नाटक

विषय विशेषज्ञ प्रोफेसर ए के पालीवाल ने बताया कि नई शिक्षा नीति को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा मंजूरी मिल गयी हैं, जो 34 **वर्षों के बाद शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रमुख और ऐतिहासिक निर्णय है**। कैबिनेट ने मानव संसाधन और विकास मंत्रालय का नाम **बदलकर शिक्षा मंत्रालय भी कर दिया है**। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा और सीखने पर **ध्यान केंद्रित करना और भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है**। नई शिक्षा नीति 2020 का प्रारूप पूर्व **भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के प्रमुख के.** कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में **विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा तैयार किया** गया था। **स्वतंत्रता के बाद यह भारत की केवल तीसरी शिक्षा नीति है**। शिक्षा के लिए पहली नीति 1968 में प्रख्यापित की गई थी और दूसरी 1986 में लागू की गई थी। लक्ष्य 2040 तक एक कुशल शिक्षा प्रणाली बनाना है, जिसमें सभी शिक्षार्थियों **की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान** पहुंच हो। **इसका उद्देश्य एक नई प्रणाली का निर्माण करना है जो भारत की परंपराओं और मूल्य प्रणालियों पर** निर्माण करते हुए 21**वीं सदी की शिक्षा के आकांक्षात्मक लक्ष्यों** के साथ संरेखित हो। **यह** राज्यों, केंद्र द्वारा शिक्षा पर सार्वजनिक खर्च को जीडीपी के 6 **प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित करता है**।

सत्र - तृतीय
समय - 14.15 से 15.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. गजेंद्र पाठक, **प्रोफेसर**, डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद

विषय - साहित्य में परंपरा और आधुनिकता

चेयरपर्सन - माया दबी चालीसरे, **सहायक प्राध्यापक**, विमला कॉलेज, श्रीसूर, केरला

रिपोर्टर - डॉ श्रुति झा, **सहायक प्राध्यापक**, चंद्रपाल डड़सेना गवर्नमेंट कॉलेज, पिथौरा, **छत्तीसगढ़**

डॉ. **गजेंद्र पाठक ने विषय की व्यापकता को स्पष्ट करते हुए बताया कि साहित्य से परम्परा का वही** अन्तर्सम्बन्ध है, **जो उसका संस्कृति से है। परम्परा में सातत्य निरन्तरता है**। **वह ऐसी गत्युन्मुख प्रक्रिया है जो एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे में एक सी नहीं रहती। वह विकासशील है**। **वह समय और स्थिति के अनुरूप अपने में** अपरिहार्य परिष्कार, **संशोधन और परिवर्तन करके सदा नये धर्म-गुण के साथ प्रकट होती है**। **वह पुरातन अवगुणों का त्याग करके नवीन अवधारणाओं से संबद्ध होती है**। वह चैतन्य है, **सनातन है और संस्कारित है**। उसमें चुनौतियों का सामना करने की अद्भुत क्षमता है। वह **विधर्मी चुनौतियों की आक्रमणता को निष्प्रभ करने में भी पूर्णतया सक्षम है**। वह विरल नहीं, **तो सहज भी नहीं है**। उसमें सम्पूर्ण जीवन दृष्टि समाहित है। **वह प्रत्यभियूत सत्य है**। उसमें अपूर्व प्रत्यवेक्षण ऊर्जा है। **वह विनीत है परन्तु आतंकित नहीं**। समरसता, समता और **सौहार्द्रता** उसकी जिजीविषा के अंत:सूत्र हैं। **उसका सबके लिए सबके साथ निरन्तर प्रवाहित होते रहना ही उसकी कर्म साधना की सक्रियता है**।

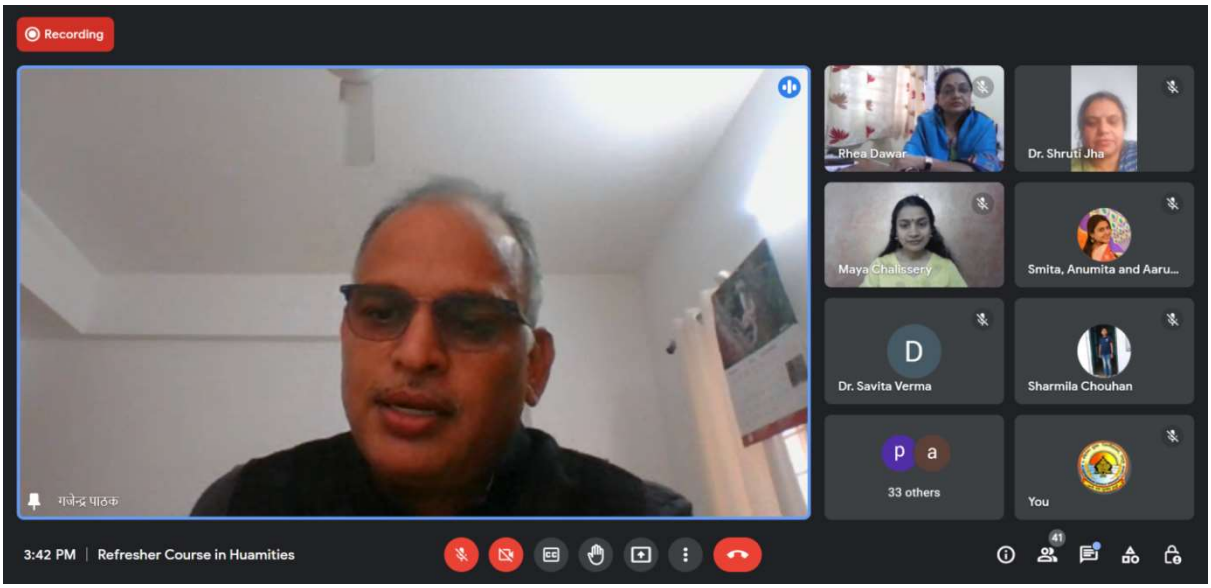

दिनांक 17.12.2022

सत्र - प्रथम

समय - 10.30 से 12.00

विषय विशेषज्ञ - डॉ. चितरंजन कर, भूतपूर्व प्रोफेसर, साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय - ध्वनि विज्ञान

चेयरपर्सन - डॉ. आस्था दीवान सहायक प्राध्यापक, समाधान महाविद्यालय, बेमेतरा, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. सेवंती दवार, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट गर्ल्स डिग्री कॉलेज, खारगोन, मध्य प्रदेश

डॉ. चितरंजन कर ने बताया कि वस्तुत: ध्वनि भाषा का मूल आधार है क्योंकि ध्वनि चिन्ह ही भाषा को अभिव्यक्त करते है। ध्वनि विज्ञान प्रत्येक ध्वनि का विज्ञान नही, बल्कि निरर्थक ध्वनियों उसके अध्ययन क्षेत्र मे नही आती है। मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए जिन भाषिक ध्वनियों का प्रयोग करता है वे ध्वनियां ही भाषा विज्ञान के लिए अपेक्षित है। ध्वनि का उत्पादन वक्ता द्वारा होता है व उसका श्रवण श्रोता द्वारा होता है। ध्वनि का आधार वायु है। ध्वनि वक्ता के मुख से निकल कर वायुतरंगों के माध्यम से श्रोता की कर्णोन्द्रिय तक पहुंच जाती है। भाषा यदि विचारों के आदान-प्रदान का साधन है तो उसका कार्य ध्वनि के माध्यम से होता है। प्राचीनकाल मे ध्वनियों का अध्ययन व्याकरण के माध्यम से होता था। शिक्षा शास्त्र व प्रतिशाख्य भी ध्वनि की जानकारी देते थे। संस्कृत वैयाकरणों का स्फोटवाद ध्वनि के आधार पर ही प्रचलित था। वैयाकरणों के अनुसार ध्वनि शब्द ध्वन् धातु से इन प्रत्यय लगाकर बना है। ध्वन् धातु शब्द करने के अर्थ मे प्रयुक्त है। कोश मे भी ध्वनि का अर्थ शब्द आवाज व

नाद आदि अर्थों मे प्रयुक्त है। इस प्रकार ध्वनि विज्ञान ध्वनियों का विज्ञान है। ध्वनि भाषा की आधारशिला है। भाषा के अत्यावश्यक तत्वों व अंगों मे ध्वनि की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। भाषा मे चाहें पद हों या वाक्य, अर्थ हो या भाव-सभी का संबंध ध्वनि से है क्योंकि ध्वनि के बिना इनका अस्तित्व नही। विचारों का आदान-प्रदान ध्वनि के माध्यम से ही संभव है। ध्वनि का अर्थ ताली बजाना, चुटकी बजाना, आंखों से संकेत करना, चिल्लाना, सिटी या हाथों आदि अंगों के संकेत से नहीं है। इस प्रकार ध्वनि विज्ञान भाषा की विविधमुखी जानकारी देने, संसार की भाषाओं का ज्ञान कराने, भाषा के विशुद्ध रूप को बताने आदि मे अत्यन्त उपयोगी है। इसी कारण भाषा की अन्य शाखाओं मे ध्वनि विज्ञान महत्वपूर्ण माना जाता है।

सत्र - द्वितीय
समय -12.15 से 13.45

विषय विशेषज्ञ - डॉ. शैलेंद्र मोहन, डायरेक्टर सेंट्रल इंस्टीट्यूट आफ इंडियन लैंग्वेज, मैसूर, कर्नाटक

विषय - भारत एक भाषाई क्षेत्र है

चेयरपर्सन - डॉ. आस्था दीवान, सहायक प्राध्यापक, समाधान महाविद्यालय, बेमेतरा, छत्तीसगढ़

रिपोर्टर - डॉ. सेवंती दवार, सहायक प्राध्यापक, गवर्नमेंट गर्ल्स डिग्री कॉलेज, खारगोन, मध्य प्रदेश

डॉ. शैलेंद्र मोहन ने बताया कि आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है, जिन्हें अनुसूचित भाषाओं के रूप में संदर्भित किया गया है और मान्यता, स्थिति और आधिकारिक प्रोत्साहन दिया गया है। इसके अलावा, भारत सरकार ने कन्नड़ , मलयालम , ओडिया , संस्कृत , तमिल और तेलुगु को शास्त्रीय भाषा का गौरव प्रदान किया है। शास्त्रीय भाषा का दर्जा उन भाषाओं को दिया जाता है जिनकी समृद्ध विरासत और स्वतंत्र प्रकृति होती है।

2001 की भारत की जनगणना के अनुसार, भारत में 122 प्रमुख भाषाएँ और 1599 अन्य भाषाएँ हैं। हालांकि, अन्य स्रोतों के आंकड़े भिन्न होते हैं, मुख्य रूप से भाषा और बोली शब्दों की परिभाषा में अंतर के कारण। 2001 की जनगणना में 30 भाषाएँ दर्ज की गईं जो एक मिलियन से अधिक देशी वक्ताओं द्वारा बोली जाती थीं और 122 भाषाएँ जो 10,000 से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती थीं। दो संपर्क भाषाओं ने भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है - फारसी और अंग्रेजी। भारत में मुगल काल के दौरान फ़ारसी अदालती भाषा थी। इसने एक प्रशासनिक भाषा के रूप में शासन कियाकई शताब्दियों तक ब्रिटिश उपनिवेश के युग तक। अंग्रेजी भारत में एक महत्वपूर्ण भाषा बनी हुई है। इसका उपयोग उच्च शिक्षा और भारत सरकार के कुछ क्षेत्रों में किया जाता है। हिंदी, जिसमें आज भारत में पहली भाषा बोलने वालों की सबसे बड़ी संख्या है, उत्तर और मध्य भारत के अधिकांश हिस्सों में भाषा के रूप में कार्य करती है। अनेकता में एकता प्रदर्शित करने वाला देश है।

समापन सत्र

दिनांक 17/01/2023

समय 14:15 से 15:45

रायपुर - मानव संसाधन विकास केंद्र पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में " साहित्य भाषा एवं संस्कृति का बदलता स्वरूप " विषय पर पूनश्चर्या पाठ्यक्रम का समापन हुआ । ऑनलाइन माध्यम से संचालित इस कार्यक्रम में 10 राज्यों के जिनमे छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, उत्तराखंड केरल, कर्नाटक, गुजरात एवं अन्य राज्यों से 39 सहायक प्राध्यापकों ने भाग लिया । कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति प्रोफेसर केसरी लाल वर्मा रहे उन्होंने कार्यक्रम की पूर्णता पर कहा शिक्षा समाज का आवश्यक अंग है एक अच्छी शिक्षा व्यवस्था के बगैर एक अच्छे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती पर यह कल्पना शिक्षकों के माध्यम से ही पूर्णता को प्राप्त करता है इसलिए शिक्षकों का उन्नयन एवं ज्ञान में परिमार्जन नितांत आवश्यक है । डॉ शैलेन्द्र सर्राफ निदेशक मानव संसाधन विकास केंद्र पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर ने कहा साहित्य का सुख सर्वोच्च सुख है क्योंकि साहित्य समाज का सृजन करता है और सृजन से नवीन अवधारणा स्पष्ट होते हैं जिसका ज्ञान शिक्षक को होना आवश्यक है ताकि एक व्यवस्थित समाज को मूर्त रूप दे सके ।कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर शैल शर्मा ने की। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ बृजेंद्र पांडे मानव संसाधन विकास केंद्र पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर ने की । कार्यक्रम के समापन में समस्त प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम की प्रतिपुस्टि देते हुए प्राप्त उपलब्धियों के बारे में अपने विचार रखे व इस पुनश्चर्या कार्यक्रम को अपने व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत जीवन के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण बताया । कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला की विभागाध्यक्ष प्रोफेसर शैल शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा यह आयोजन कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागीयों के साथ - साथ साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला के सभी प्राध्यापकों के शैक्षिक उन्नयन के लिए भी महत्वपूर्ण रहा । इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक उन्नयन व सृजनात्मकता के साथ-साथ शिक्षा में गुणवत्ता के महत्व से अवगत कराना है । इस कार्यक्रम के कार्यक्रम समन्वयक डॉ बृजेंद्र पांडे ने सभी प्रतिभागियों को कार्यक्रम को निर्बाध गति से संचालित करने एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्णता में सहभागी हेतु बधाई दिया । उन्होंने कहा शिक्षा के साथ-साथ समाज में नित नए परिवर्तन एवं परिमार्जन हो रहे हैं, नई तकनीकी एवं नए परिवर्तनों से नवनियुक्त प्राध्यापक विषय विशेषज्ञों से लाभान्वित होंगे उन्होंने कहा एचआरडीसी रिफ्रेशर कोर्स के माध्यम से विश्व में हो रहे नित नए अनुसंधान और तथ्यों से नव नियुक्त प्राध्यापकों को अवगत कराने हेतु इस तरह का आयोजन करते आ रहा है । समापन सत्र के चेयर पर्सन डॉ यशवंत कुमार साव सहायक प्राध्यापक गवर्नमेंट कॉलेज अरमरीकला जिला बालोद छत्तीसगढ़ रहे एवं रिपोर्टर डॉ शिव शेट्टी नारायण अशोकराव सहायक प्राध्यापक पंसारे महाविद्यालय अर्जापुर महाराष्ट्र रहे ।

UGC-Human Resource Development Centre
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, (CG)
Refresher Course- Humanities
(05.12.2022 to 17.12.2022)
List of Participants

Sr. No.	Name of Participants	Email	Mobile No.	Designation	Subject	College	University	Photo
01.	Dr. Neeta Sharma	neetashivam@gmail.com	9617366281	Assistant Professor	English	Shri Shankaracharya Mahavidyalaya, Junwani, Bhilai, C.G.	Hemchand Yadav University, Durg, C.G.	
02.	Shrimati Ramkumari Dhurwa	rkdhurwa@gmail.com	7999924016	Assistant Professor	Music	Govt. Kamla Devi Rathi Mahila P.G. College, Rajnandgaon, C.G.	Hemchand Yadav University, Durg, C.G.	
03.	Dr Shruti Jha	jhashrutidr@gmail.com	7746933359	Assistant Professor	English	Chandrapal Dadsena Govt College Pithora	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	
04.	Dr. Savita Verma	verma24august@gmail.com	9926738227	Associate Professor	Hindi	Shri Rawatpura Sarkar University, Raipur, C.G.	Shri Rawatpura Sarkar University, Raipur, C.G.	
05.	Pramila Patel	patelpramila480@gmail.com	9589578886	Assistant Professor	Hindi	Shashidhar Panda Govt. College, Sariya, C.G.	Shaheed Nandkumar Patel University, Raigarh, C.G.	
06.	Dr. Nidhi Mishra	redsonja2580@gmail.com	8815017150	Assistant Professor	English	Govind Sarang Govt. Law College, Bhatapara, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	
07.	Keshav P.	keshavjahagirdar@gmail.com	9980439692	Assistant Professor	English	Shri K.H. Patil Govt. First Grade College, Hulkoti, Karnatak	Karnatak University, Dharwad, Karnatak	
08.	Dr Manappa Krishna Honakamble	manappahonakamble@gmail.com	8050458048	Assistant Professor	English	Govt. First Grade College, Haliyal, Karnatak	Karnatak University, Dharwad, Karnatak	
09.	Dr. Nidhi Gupta	nidhigupta.cg@gmail.com	9993324100	Assistant Professor	English	Govt. G.N.A. P.G. College, Bhatapara, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	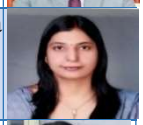
10.	Aruna J	jai.aruna07@gmail.com	8122424388	Assistant Professor	English And Literature	Madras Christian College, Chennai, Tamil Nadu	University Of Madras, Chennai, Tamil Nadu	
11.	Dr. Aastha Diwan	diwanaastha569@gmail.com	8959667422	Assistant Professor	Hindi	Samadhan College, Bemetara, C.G.	Hemchand Yadav University, Durg, C.G.	
12.	Rosemeena Kujur	rmkujurcghe@gmail.com	9713850600	Assistant Professor	Hindi	Shaheed Nand Kumar Patel Govt. College, Birgaon, Raipur, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	
13.	Dr. Geeta Lakhotra	drgeetalakhotra@gmail.com	7006189855	Assistant Professor	English	Pt. Prem Nath Dogra Govt. Degree College, Samba, (J&K)	Jammu University, (J&K)	
14.	Dr. Jayati Biswas	jayatibiswas25@gmail.com	9424130323	Assistant Professor	Hindi	Virangana Avanti Bai Govt. College, Chhuikhadan, C.G.	Hemchand Yadav University, Durg, C.G.	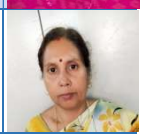

Sr. No.	Name of Participants	Email	Mobile No.	Designation	Subject	College	University	Photo
15.	Dr. T. Mangayarkarasi	tmangai09@gmail.com	9791225574	Assistant Professor	English	Govt. Arts And Science College, Manur, Tirunelveli, Tamil Nadu	Manonmaniam Sundaranar University, Tirunelveli, Tamil Nadu	
16.	Pradeep Barman	pradeep.barman@hnlu.ac.in	8817580877	Assistant Professor	English	Hidayatullah National Law University, Raipur, C.G.	Hidayatullah National Law University, Raipur, C.G.	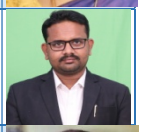
17.	Laxminarayan Jalhare	laxmijalhare@gmail.com	9977137908	Assistant Professor	Hindi	Govt. Brijlal Verma College, Palari, Dist-Baloda Bazar, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	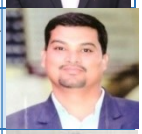
18.	Namrata Dhruw	namratadhruw2020@gmail.com	7987556128	Assistant Professor	Hindi	Govt. Navin College, Nava Raipur, Raipur, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	
19.	Dr. Seema Pandey	drseemapandey54@gmail.com	9907999954	Assistant Professor	Sanskrit	Govt. Bilasa Girls P.G. College , Bilaspur, C.G	Atal Bihari Vajpayee University, Bilaspur, C.G.	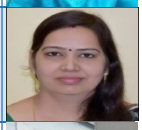
20.	Dr. Hemlata S. Kanchankar	drkanchankar@gmail.com	9730202588	Assistant Professor	Hindi	Pandit Jawaharlal Nehru Mahavidyalaya, Aurangabad, M.H.	Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad, M.H.	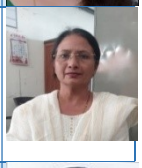
21.	Dr. Deepa Raga	deeparaga5516@gmaig.com	7353325555	Assistant Professor	Hindi	B.V. Bhoomraddi College Of Arts Science And Commerce, Bidar, Karnataka	Gulberga University, Kalburgi, Karnataka	
22.	Dr. Rathod Rajkumar Thavara	rajkumarrathodt@gmail.com	8095648971	Assistant Professor	Hindi	Kavirtna Kalidas Deree College, Bidar, Karnataka	Gulberga University, Kalburgi, Karnataka	
23.	Dr. Sevanti Dawar	sevanti110915arya@gmail.com	9826462539	Assistant Professor	Hindi	Govt. Girls Degree College, Khargone, M.P.	Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore, M.P.	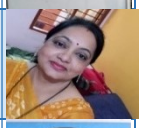
24.	Dr. Niruben Harsukhbhai Borisaniya	nirubenborisaniya467@gmail.com	08780571138	Assistant Professor	Hindi	Arts And Commerce College Babra, Gujarat	Saurashtra University, Rajkot, Gujarat	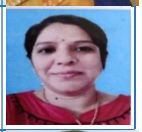
25.	Dr. Yashwant Kumar Sao	yashwantsao@gmail.com	7000987743	Assistant Professor	Hindi	Govt. College Armarikala, Dist-Balod, C.G.	Hemchand Yadav University, Durg, C.G.	
26.	Dr Shivshette Narayan Ashokrao	narayanshivshette@gmail.com	9422558573	Assistant Professor	Marathi	Pansare Mahavidyalaya, Arjapur, M.H.	Swami Ramanand Teerh Marathwada University, Nanded, M.H.	
27.	Dr. Rajesh Kumar Shrivas	dr.rajeshshrivas@gmail.com	9827196498	Assistant Professor	Hindi	Seth Phoolchand Agrwal Smriti College, Nawapara, Raipur, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	
28.	Dr Sharmila Chouhan	sharmilabaghel02@gmail.com	9926897159	Assistant Professor	Hindi	Mata jija Govt. P.G. Girls College, Indore, M.P.	Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore, M.P.	
29.	Dr. Rajeshwari Chandrakar	drrajeshwarichandrakar@gmail.com	7869340698	Assistant Professor	Hindi	Seth Phool Chand Agrawal Smriti Mahavidyalay, Nawapara, Raipur, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	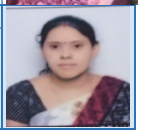

Sr. No.	Name of Participants	Email	Mobile No.	Designation	Subject	College	University	Photo
30.	Jeewan Lal Gayakwad	jeewanlalgayakwad86@gmail.com	9754850501	Assistant Professor	Hindi	Seth Phool Chand Agrawal Smriti Mahavidyalay, Nawapara, Raipur, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	
31.	Dr prakash Chandra satpathy	prakashsatpathy05@gmail.com	7978861796	Assistant Professor	Hindi	Ramchandi Mahavidyalaya, Saraipali, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	
32.	Dr Rachana Mishra	rachanamishra241@gmail.com	9131320683	Assistant Professor	English	Govt. J Yoganandam Chhattisgarh College, Raipur, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	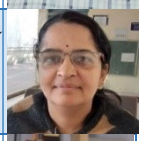
33.	Dr Smita Sharma	smitaanujsharma@gmail.com	9826115060	Assistant Professor	English	Center for Basic Sciences, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	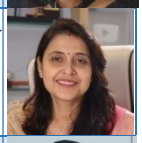
34.	Maya Davi Chalissery	mayachalissery@gmail.com	9495408825	Assistant Professor	English	Vimala College, Thrissur, Kerala	University of Calicut, Kerala	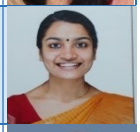
35	Dr. Suresh Singh Rathore	srathore@curaj.ac.in	9928344566	Assistant Professor	Hindi	Central University Of Rajasthan, Kishangarh, Ajmer, Rajasthan	Central University Of Rajasthan, Kishangarh, Ajmer, Rajasthan	
36.	Jeevan Sagar	jeevan.sagar@hnlu.ac.in	9993085712	Assistant Professor	English	Hidayatullah National Law University, Raipur, C.G.	Hidayatullah National Law University, Raipur, C.G.	
37.	Dr. Sunita Gupta	sunita1602@gmail.com	6261566623	Assistant Professor	ENGLISH	Govt. P.G. College, Narsinghgarh, M.P.	Barkatullah University, Bhopal, M.P.	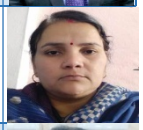
38.	Dr. Rajshree Naidu	rajshreenaidu71@gmail.com	7587329569	Associate Professor	English	Bharti University, Durg, C.G.	Bharti University, Durg, C.G.	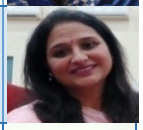
39.	Sandhya Gupta	Sandhya.gupta1107@gmail.com	9893400938	Principal	English	Gurukul Mahila Mahavidyalaya, Raipur, C.G.	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, C.G.	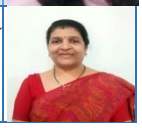

Refresher Course – Humanities
(05.12.2022 to 17.12.2022)
Participants List
Course Coordinator – Prof. Shail Sharma

Chairperson and Reporter List

Date	Chairperson	Reporter	Chairperson	Reporter
	1st Half		2nd Half	
05.12.2022	Dr. Neeta Sharma	Rosemeena Kujur	Dr. Niruben Harsukhbhai Borisaniya	Jeevan Sagar
06.12.2022	Shrimati Ramkumari Dhurwa	Dr. Geeta Lakhotra	Dr. Yashwant Kumar Sao	Dr. Sunita Gupta
07.12.2022	Dr Shruti Jha	Dr. Jayati Biswas	Dr Shivshette Narayan Ashokrao	Dr. Rajshree Naidu
08.12.2022	Dr. Savita Verma	Dr. T. Mangayarkarasi	Dr. Rajesh Kumar Shrivas	Dr. Nidhi Gupta
09.12.2022	Pramila Patel	Pradeep Barman	Dr Sharmila Chouhan	Dr. Shraddha Hirkane
10.12.2022	Dr. Nidhi Mishra	Laxminarayan Jalhare	Dr. Rajeshwari Chandrakar	Aruna J
12.12.2022	Keshav P.	Namrata Dhruw	Jeewan Lal Gayakwad	Dr. Aastha Diwan
13.12.2022	Dr Manappa Krishna Honakamble	Dr. Seema Pandey	Dr prakash Chandra satpathy	Dr. Niruben Harsukhbhai Borisaniya
14.12.2022	Dr. Nidhi Gupta	Dr. Hemlata S. Kanchankar	Dr Rachana Mishra	Dr. Neeta Sharma
15.12.2022	Dr. Shraddha Hirkane	Dr. Deepa Raga	Dr Smita Sharma	Shrimati Ramkumari Dhurwa
16.12.2022	Aruna J	Dr. Rathod Rajkumar Thavara	Maya Davi Chalissery	Dr Shruti Jha
17.12.2022	Dr. Aastha Diwan	Dr. Sevanti Dawar	Dr. Suresh Singh Rathore	Dr. Yashwant Kumar Sao

UGC - HRDC, PRSU, Raipur, Chhattisgarh
Time Table: Refresher Course Humanities
Course Coordinator: Prof. Shail Sharma

(05.12.2022 to 17.12.2022)

S.no.	Session-I (10:30 To 12:00)		Session –II (12:15 To 13:45)		Session-III (14:15 To 15:45)		Session-IV (16:00 To 17:30)
Day 01 05.12.2022	Registration , Inauguration and Induction	**TEA**	Dr. Chittaranjan Kar Former Professor SoS in literature andLanguages Pt.RSU 9137448971 **Topic**: Language an Culture	**LUNCH**	Dr. Shriram Parihar Dept. of Hindi Khandva , M.P 9425342748 **Topic:** भारतीय संस्कृति : अवधारणा और आयाम	**TEA**	Dr. Laltu (Harjinder Singh) Retd. Prof. & Critic IIIT, Hyderabad **Topic:** भाषा और साहित्य :कुछ बुनियादी बातें
Day 02 06.12.2022	Dr. Surya Prasad Dixit Retd. Professor, Lucknowuniversity, Lucknow, U.P 9451123525 **Topic:** भारतीय संस्कृति	**BREAK**	Dr. Ashok Thorat Professor, Institute of Advanced Studies inEnglish recognized by and Affiliated to the University of Pune, 07888049405 **Topic**: Emerging Research Scenario	**BREAK**	Dr. Karuna Shankar Upadhyay, Professor, University of Mumbai 09869511876, 09167921043 **Topic:** साहित्य और संस्कृतिका अंतः संबंध	**BREAK**	Dr. Madhu Kamra Dept.of English Durga College, Raipur 7024101095 **Topic**: Cultural Discourse
Day 03 07.12.2022	Dr. Shailendra Kumar Sharma, Professor , Vikram University Ujjain 09826047765	**TEA BREAK**	Dr. Ashok Thorat Professor, Institute of Advanced Studies inEnglish recognized by and Affiliated to the University of Pune, 07888049405 **Topic**: Digital Humanities	**LUNCH BREAK**	**Microteaching** Dr. Brijendra Pandey HRDC, Pt. R.S.U. Raipur brijpandey09@gmail.com 9827159831	**TEA BREAK**	**Microteaching** Dr. Brijendra Pandey HRDC, Pt. R.S.U. Raipur brijpandey09@gmail.com 9827159831
Day 04 08.12.2022	Dr. Pramod Kovvaprath Department of Hindi, Calicut University, Malappuram, Kerala 09447887384 **Topic:** समकालीन कविता		Dr. S.Z.H Abidi Former Professor Lucknow University,Lucknow, U.P 9935237197 **Topic:** Literary Discourse		Dr. Shailendra Kumar SinghProfessor Dept. of Linguistics North Eastern Hill University(NEHU), Shillong,Meghalaya 9863279254 **Topic:** भारत, भाषाऔर भाषी		Dr. Shripal Bhalechandra Joshi Retd. Professor, RSTM University, Nagpur, Maharashtra9960493622 **Topic:** Culture Literature AndCommunication
Day 05 09.12.2022	Dr. Pawan Agarwal Professor, Dept. Hindi, Lucknow University **Topic:** लोक साहित्य का बदलता परिदृश्य		Dr. Ramakant Pandey Professor, Rashtriya SanskritSansthan, Bhopal M.P 9968688781 **Topic:** संस्कृत और हिंदीसाहित्य का स्वरूप		Dr. Jaya Tiwari Professor, Dept. of English Govt. D.B. Girls P.G. College, Raipur 9424231575 **Topic**: Bharat Muni-Rasa Theory		Dr. Neeraj Khare Professor, Department of Hindi, BHU 9450252498 **Topic:** हिंदी कहानी का बदलता परिदृश्य

S. no	Session-I (10:30 To 12:00)		Session –II (12:15 To 3:45)		Session-III (14:15 To 15:45)		Session-IV (16:00 To 17:30)
Day 06 10.12.2022	Dr. Siya Ram Sharma Professor Govt. College Uttai 9329511024 **Topic:** संत भक्ति आंदोलन और कबीर	**TEA BREAK**	Dr. Sunil Kumar Dwivedi Professor in Hindi Department,University of North Bengal **Topic:** साहित्य में मानव मूल्य	**LUNCH BREAK**	**Seminar** Dr. Madhulata Bara Associate Professor SoS in Literature and Languages, Pt.RSU, Raipur9425542755	**TEA BREAK**	**Seminar** Dr. Madhulata Bara Associate Professor SoS in Literature and Languages,Pt.RSU, Raipur 9425542755
Day 07 12.12.20 22	Dr. Chittaranjan Kar Former Professor SoS in literature and Languages Pt.RSU Topic: Language Teaching 9137448971		Dr. Geeta Nayak Professor Dept. Of Hindi Vikram University, Ujjain 9926834596 Topic: अवाचिक भाषा		Prof. Reeta Chaoudhary Professor, Lucknow University Topic: भारतीय संस्कृति, स्त्री प्रश्न और हिंदी का		Shri. Girish Pankaj Journalist &Writer Topic: व्यंग्य की प्रासंगिकतः कल आज और कल
Day 08 13.12.20 22	Dr. Nand Kishor Pandey Professor Dept. of Hindi, Rajasthan University, Jaipur, Rajasthan 09997659658 Topic: भाषा साहित्य और संस्कृति : राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में		Dr. Rupa Gupta Professor, Department of Hindi, University of Burdwan, Golapbag, Bardhaman, West Bengal 09836285868 Topic: नवजागरण और स्त्री प्रश्न		Dr. Bihari Lal Sahu Former Professor Department of Hindi Kirodimal Government Arts and Science college , Raigarh, 9425250599 Topic: छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति		Dr. Avadesh Kumar Professor Dept. of Hindi, Mahatma Gandhi International University, Wardha 09926394707/07887588732 Topic: साहित्य संस्कृति और समाज
Day 09 14.12.20 22	Dr. Savita Singh Department of English Government Nagarjuna Post Graduate College of Science Raipur Topic: Spirituality and Literature		Dr. Suraj Bahadur Thapa Professor , Lucknow University, Lucknow, U.P 9450656030 Topic: आधुनिकता– उत्तर आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी साहित्य : समाज और संस्कृति		**Project Presentation** Dr. Sudhir Sharma Head, Department of Hindi Kalyan Post Graduate College, Bhilai 9425358748		**Project Presentation** Dr. Sudhir Sharma Head, Department of Hindi Kalyan Post Graduate College, Bhilai 9425358748
Day 10 15.12. 2022	Dr. Arti Parganiha Professor, SoS in Life Science PtRSU 9826551089 **Topic**: Internal Quality Assurance Cell	**TEA**	Dr. Dinesh Kushwah Professor & Head APS University Rewa, M.P 09425847022 **Topic:** साहित्य में स्त्री विमर्श	**LUNCH**	Dr. Arun HotaProfessor West Bengal State University Barasat,Kolkata, W.B 09434884339 **Topic:** कोरोना काल कासाहित्य पर प्रभाव	**TEA**	Prof. Dilip Singh Professor Indira Gandhi National TribalUniversity, Amarkantak, M.P 08989105802 **Topic:** भाषा और संस्कृतिका संबंध
Day 11 16.12.2022	Dr. Dinesh Chandra Chamola Professor Uttarakhand Sanskrit University 09411173339 **Topic:** अनुवाद की संस्कृति : शब्दावलीऔर सम्प्रेषणीयता	**BREAK**	Prof .A.K. Paliwal Department of English Govt. Hamidia College, Bhopal, M.P 9406982790 **Topic**: To Reinterpret the TextsThrough the Prism of New Paradigms and the NEP 2020	**BREAK**	Dr. Gajendra Pathak Professor Dept. of Hindi, University of Hyderabad,Hyderabad-500046 08374701410 **Topic:** साहित्य में परंपराऔर आधुनिकता	**BREAK**	**Ending Test**
Day 12 17.12.2022	Dr. Chittaranjan Kar Former Professor SoS in literature and Languages Pt.RSU **Topic:** Phonetics 9137448971		Dr. Shailendra Mohan Director, Central Institute of Indian Language, Mysore 9850342451 **Topic:** India is Linguistic Area				

State Wise Participants

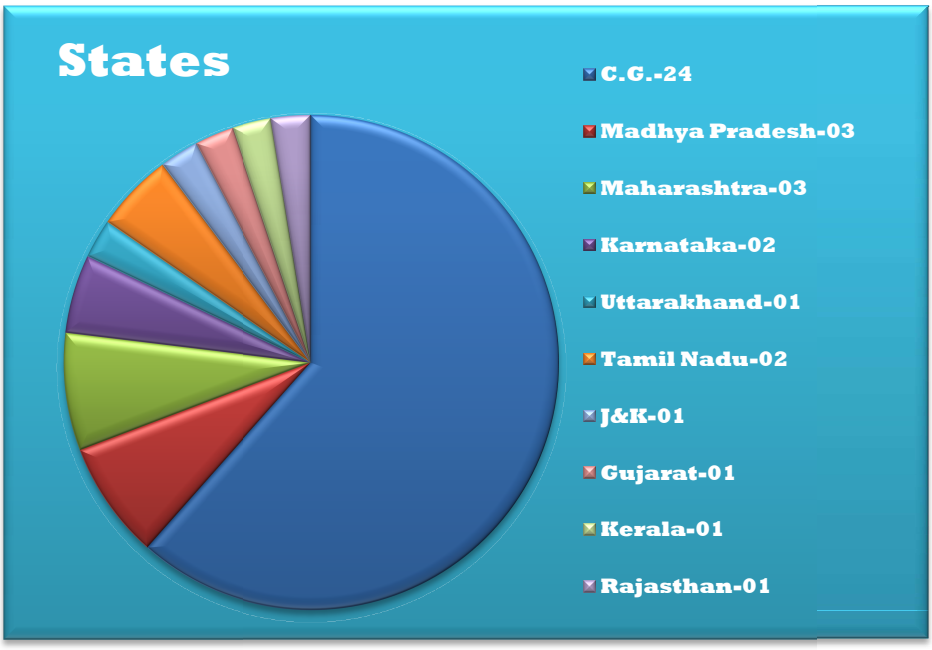

Gender Wise Participants

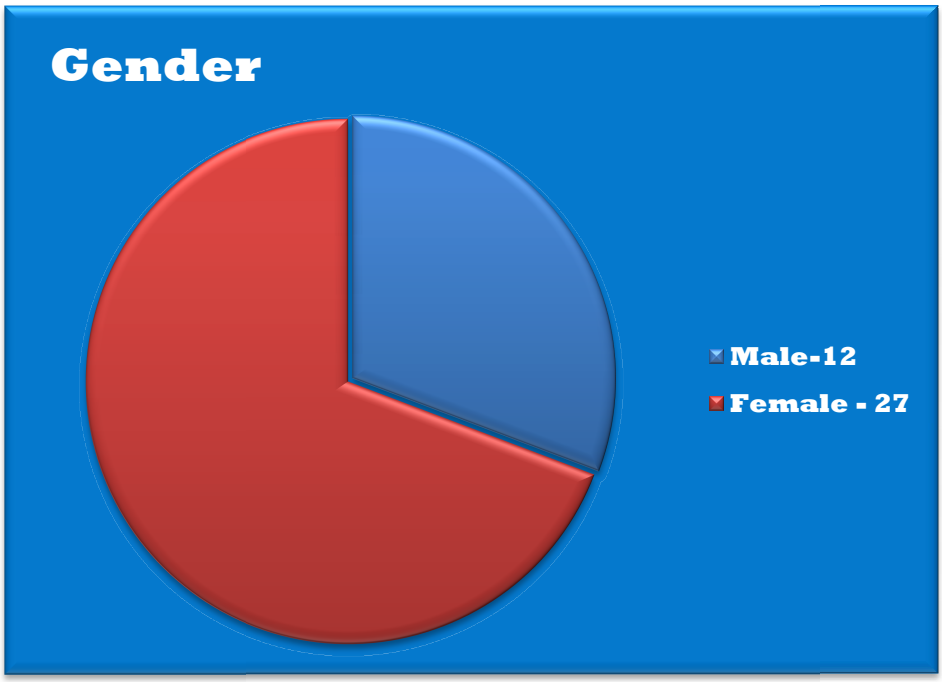

Some Glimpses of the Refresher Course - Humanities

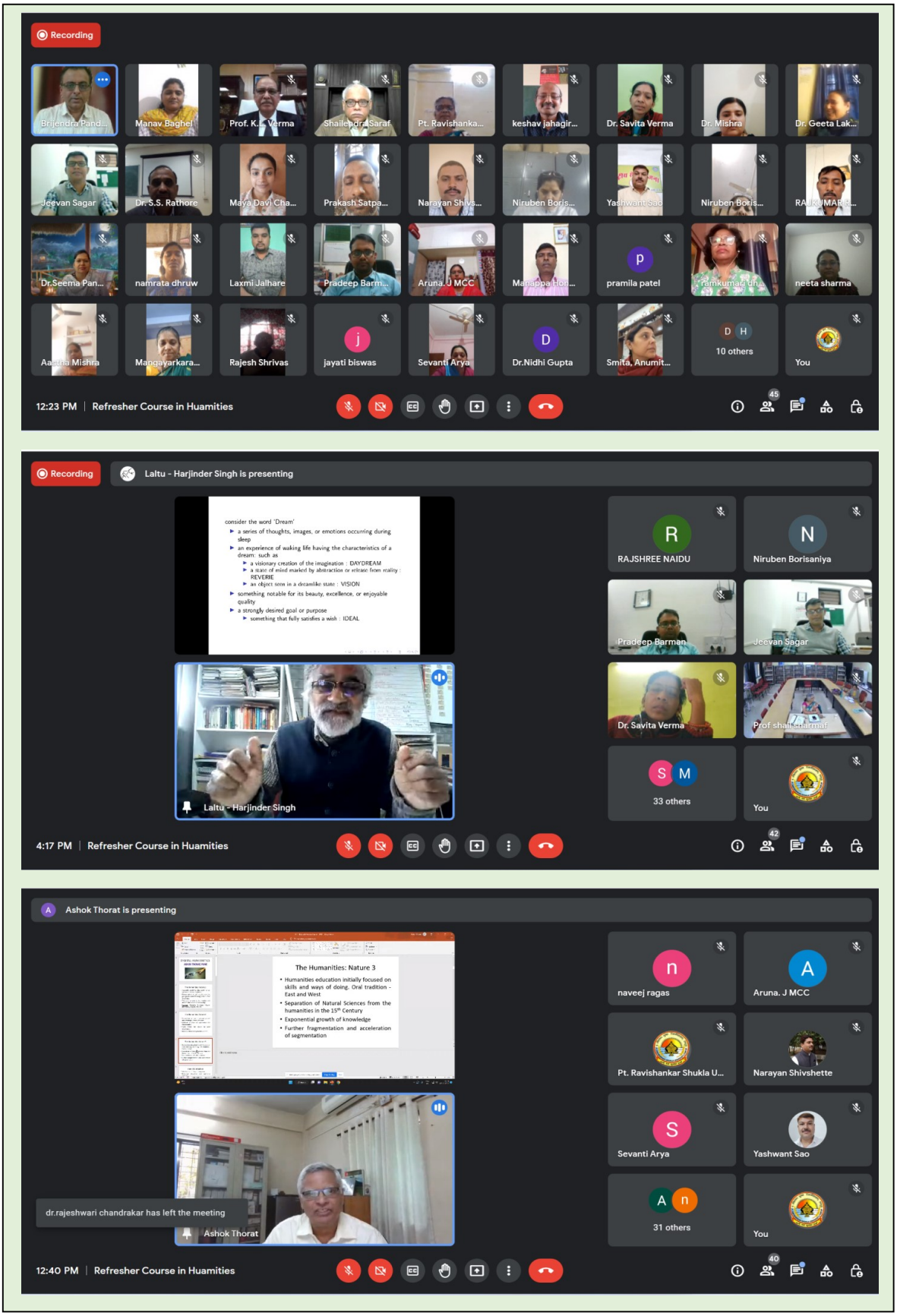

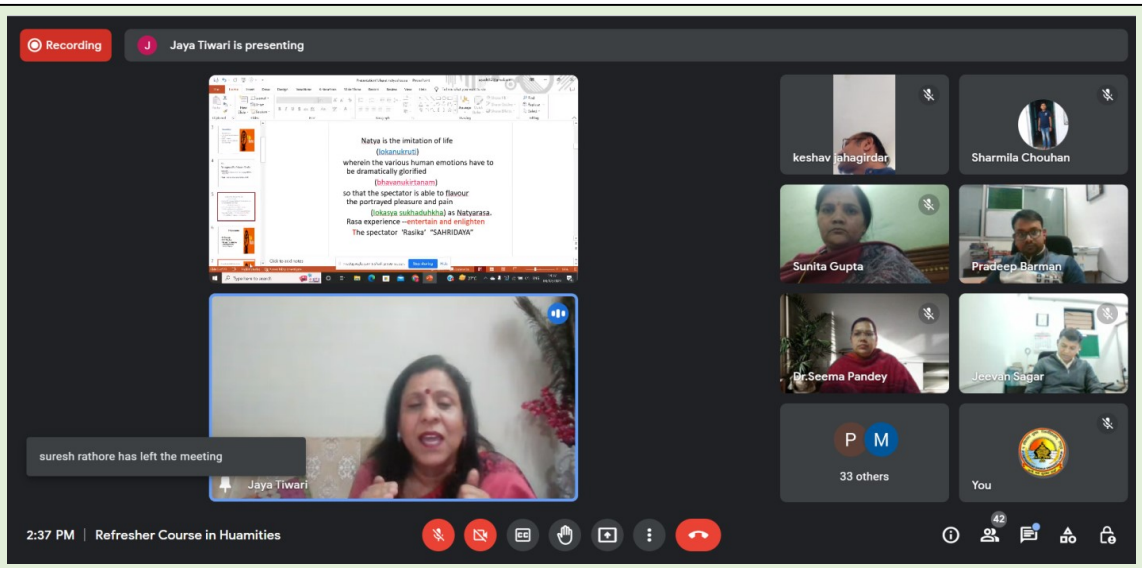

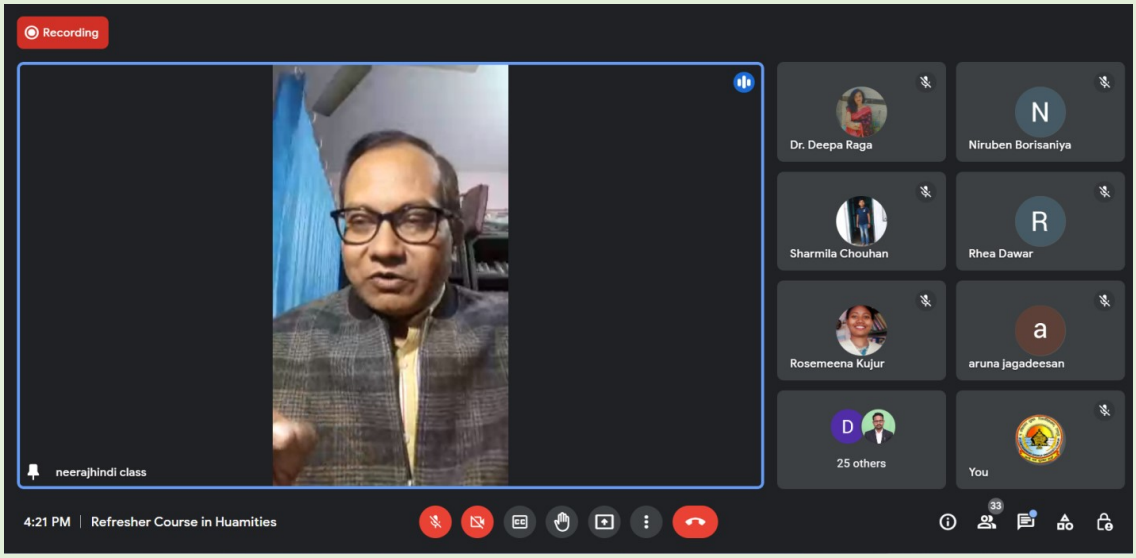

Recording
Jaya Tiwari is presenting
Natya is the imitation of life
(lokanukruti)
wherein the various human emotions have to be dramatically glorified
(bhavanukirtanam)
so that the spectator is able to flavour the portrayed pleasure and pain
(lokasya sukhadukha) as Natyarasa.
Rasa experience –entertain and enlighten
The spectator 'Rasika' "SAHRIDAYA"
suresh rathore has left the meeting
Jaya Tiwari
keshav jahagirdar
Sharmila Chouhan
Sunita Gupta
Pradeep Barman
Dr.Seema Pandey
Jeevan Sagar
33 others
You
2:37 PM | Refresher Course in Huamities

Recording
neerajhindi class
Dr. Deepa Raga
Niruben Borisaniya
Sharmila Chouhan
Rhea Dawar
Rosemeena Kujur
aruna jagadeesan
25 others
You
4:21 PM | Refresher Course in Huamities

Recording
Aastha Mishra
Shailendra Saraf
Pt. Ravishanka...
Pt. Ravishanka...
Sunita Gupta
Hemlata Kanc...
Dr. Deepa Raga
Prof. Kiti Verma
Dr. Suresh Sin...
Rhea Dawar
Jeevan Sagar
aruna jagadee...
Dr.Nidhi Gupta
Yashwant Sao
Dr. Neeta Shar...
JEEWAN LAL ...
Rosemeena K...
namrata dhruw
Prakash Satpa...
Mangayarkara...
Smita, Anumit...
jayati biswas
Sharmila Chou...
dr.rajeshwari c...
Maya Challissery
Dr. Mishra
pramila patel
Laxmi Jalhare
Dr. Savita Verma
Manappa Hon...
Narayan Shivs...
Pradeep Barm...
Rachana Mishra
Dr.Seema Pan...
9 others
You
2:48 PM | Refresher Course in Huamities